सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफत व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अगस्त, 2014 वर्ष 13 अंक 06

यह ज़मीन अल्लाह की है जिसको चाहे उसको दे

यह ज़मीन अल्लाह की है जिसको चाहे उसको दे
बन्दे को यह चाहिए, अल्लाह को राज़ी करे
अल्लाह बस माबूद है उसकी ही हम पूजा करें
और नबी प्यारे मुहम्मद के ही हम पैरो रहें
हाल जैसा भी यहां हो हम रहें इस्लाम पर
और दुआ करते रहें, क़ाइम रहें ईमान पर
वक़्त का हाकिम यहाँ गर ज़ुल्म से बचता रहा
बे सहारा और ग़रीबों की मदद करता रहा
रब का होगा फैसला कि वह यहाँ हाकिम रहे
ख़ल्क़ की ख़िदमत करे और ख़ूब वह फूले फले
या ख़ुदा प्यारे नबी पर भेज तू लाखों सलाम
अम्न याँ काइम रहे और ना रहे जालिम इमाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
आजिमीने हज की	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	6
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	11
हिन्दुस्तानी मुसलमान	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	16
इख़्लास और उसके बरकात	मौ0 सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0	20
मक्का मुकर्रमा के पाँच दिन	इदारा	21
तबलीग़े नबवी सल्ल0 उसके	अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0	27
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	29
एक हो उम्मत नबी की	इदारा	31
स्वतंत्रता दिवस	इदारा	32
इस्लाम में विवाह	इदारा	35
उर्दू सीखिए	इदारा	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बकर:

अनुवाद- और लड़ो अल्लाह की राह में और जान लो कि अल्लाह बेशक खूब सुनता जानता है[244] कौन शख़्स है ऐसा जो कि कर्ज दे अल्लाह को अच्छा कर्ज फिर दो गुना कर दे अल्लाह उसको कई गुना, और अल्लाह ही तंगी कर देता है और वही कशाइश करता है और उसी की ओर तुम लौटाये जाओगे[1(245)] क्या न देखा तूने एक जमाअत बनी इस्राईल को मूसा अलै0 के बाद[2] जब उन्होंने कहा अपने नबी से मुकर्रर कर दो हमारे लिए एक बादशाह ताकि हम लड़ें अल्लाह की राह में, पैग़म्बर ने कहा क्या तुमसे यह भी उम्मीद है कि अगर हुक्म हो तुमको लड़ाई का तो तुम उस वक्त न लड़ो, वह बोले हमको क्या हुआ कि हम न लड़ें अल्लाह की राह में और हम तो निकाल दिये गये अपने घरों से और बेटों से, फिर जब हुक्म हुआ उनको लड़ाई का तो वह सब फिर गये मगर थोड़े से उनमें के और अल्लाह तआला खूब जानता है गुनहगारों को[3(246)] और फरमाया उनसे उनके नबी ने बेशक अल्लाह ने मुकर्रर फरमा दिया तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह, कहने लगे क्यों कर हो सकती है उसको हुकूमत हम पर और हम जियादा हक़दार हैं सलतनत के उससे और उसको नहीं मिली कशाइश (वुसअत) माल में, पैग़म्बर ने कहा बेशक अल्लाह ने पसंद फरमाया उसको तुम पर और जियादा वुसअत दी उसको इल्म और जिस्म में और अल्लाह देता है मुल्क अपना जिसको चाहे और अल्लाह है फज्ल करने वाला सब कुछ जानने वाला[4(247)]।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. यानी जब मालूम हो चुका कि अल्लाह के हुक्म में तुम्हारी जान और माल है। तो अब तुम को चाहिए कि लड़ो काफिरों से अल्लाह के वास्ते दीन के लिए और जान लो कि खुदा तआला सुनता है बहाना करने वालों की बातें और जानता है उनके मन्सूबों को और चाहिए कि खर्च करो अल्लाह के रास्ते में माल और तंगी से मत ड़रो कि वुसअत और तंगी सब उसके इख्तियार में है और उसी की तरफ लौट कर सबको जाना है। कर्जे हसना उसे कहते हैं जो कर्ज दे कर तकाज़ा न करे और अपना एहसान न रखे और बदला न चाहे और उसे हक़ीर न समझे, और खुदा को देने से जिहाद में खर्च करना मुराद है या मोहताजों को देना।

2. इस किस्से से हक़ तआला का तंगी व वुसअ़त जिसका अभी जिक्र हुआ खूब साबित होता है, यानी फकीर को बादशाह बनाना और बादशाह से बादशाहत छीन लेना और कमज़ोर को ताक़तवर और ताकतवर से कमज़ोर कर देना।

शेष पृष्ठ.....19.... पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

लैलतुल क़द्र के कियाम की फजीलत–

अनुवादः हमने नाजिल फरमाया (कुर्आन) शबे क़द्र में तुम जानते हो शबे क़द्र क्या चीज़ है? शबे क़द्र हजार महीनों से बेहतर है फिरिश्ते और जिब्रईल अलै0 इसी रात में अपने रब के हुक्म से उतरते हैं, और तुलूअ़ आफताब तक वह रात सलामती है हमने उसको नाजिल फरमाया एक मुबारक रात में बेशक हम डराने वाले हैं।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स लैलतुल क़द्र में ईमान और अज्र की खातिर नमाज़ पढ़े तो उसके अगले गुनाह माफ कर दिये जायेंगे। (बुख़ारी—मुस्लिम)

शबे क़द्र आखरी सात रातों में है–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि बाज़ सहाबा ने पिछली सात रातों में लैलतुल क़द्र ख़्वाब के अन्दर देखी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं देखता हूँ कि तुम सबने आखरी सात रातों ही के मुतअल्लिक़ ख़्वाब देखा है पस जो शख़्स शबे क़द्र की तलाश में हो उसको चाहिए कि आखरी सात रातों में तलाश करे।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

अशरे अखीरा–

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमजान की पिछली दस रातों में एतिकाफ में बैठा करते थे और फरमाते थे कि रमजान की पिछली दस रातों में शबे क़द्र तलाश करो।

(बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमज़ान के आखिरी अशरे में पूरी रात जागते थे और अपने घर वालों को भी जगाते थे और इबादत के लिए कमर कस कर तैयार हो जाते थे।

(बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमजान में इबादत करने में ऐसी कोशिश करते थे कि ऐसी किसी महीने में न करते थे और रमजान के पिछले अशरे में ऐसी कोशिश फरमाते थे जो दूसरे दिनों में नही करते थे। (मुस्लिम)

शबे क़द्र की खास दुआ–

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अगर मैं शबे क़द्र पहचान लूं तो उस वक्त क्या दुआ माँगूं, आपने फरमाया यह कहो ऐ अल्लाह तू माफ करने वाला है और माफी को पसंद फरमाता है तू मुझे माफ कर दे।

मिस्वाक की फजीलत

मिस्वाक की ताकीद–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर मैं अपनी उम्मत के लिए मुश्किल न समझता तो हुक्म देता कि हर नमाज के वक़्त मिस्वाक करे (बुखारी–मुस्लिम)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामूल–

हज़रत हुज़ैफा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नींद से जागते थे तो अपना मुँह मुबारक मिस्वाक से साफ करते थे।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए वुज़ू का पानी और मिस्वाक तैयार रखते थे जिस वक्त भी अल्लाह का हुक्म होता था आप उठ जाते थे और मिस्वाक करते थे, फिर वुज़ू करके नमाज़ पढ़ते थे। (मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम लोगों को मिस्वाक करने के बारे में बहुत ताकीद कर चुका हूँ। (बुखारी)

हज़रत शुरैह बिन हानी रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने हज़रत आइशा रज़ि0 से पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब घर तशरीफ लाते थे तो पहले क्या काम करते थे उन्होंने कहा मिस्वाक इस्तेमाल फरमाते थे। (मुस्लिम)

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि0 से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और मैंने देखा कि मिस्वाक का सिरा आपकी जबाने मुबारक पर है।

(बुखारी–मुस्लिम)

मिस्वाक के फायदे–

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मिस्वाक दांत को साफ करने वाली और अल्लाह को राजी करने वाली है। (नसई)

उमूरे फितरत–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया पाँच चीज़ें फितरते सलीम का तक़ाज़ा हैं–

1. खत्ना 2. नाफ के नीचे के बाल मूंडना 3. नाखून काटना 4. बगल के बाल साफ करना 5. मोछें कतराना

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया दस चीज़ें उमूरे फितरत में हैं 1. मोंछें कतराना 2. दाढ़ी छोड़ना 3. मिस्वाक करना 4. पानी से नाक साफ करना 5. नाखून काटना 6. उंगलियों के जोड़ों को धोना 7. बगल के बाल उखेड़ना 8. नाफ के बाल मूंडना 9. इस्तिन्जा करना। रावी कहते हैं कि दसवीं का नाम भूल गया लेकिन अन्दाज़े से मालूम होता है कि दसवीं चीज़ शायद कुल्ली करना है। (मुस्लिम)

हज़रत इब्ने उमर से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया दाढ़ी बढ़ाओ और मोंछें कतराओ। (बुख़ारी–मुस्लिम)

❖❖❖

आज़िमीने हज की ख़िदमत में
(हज पर जाने वालों की सेवा में)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

अल्लाह तआला आपको हज का सफर मुबारक करे, आप अपने हज के लिए पूरी तरह तैयार होंगे। आपका यह ख़ादिम (सेवक) 80 वर्ष का हो चुका है, और हज के विषय में कुछ इल्म भी रखता है और तजरिबा भी इसलिए आपके सफर के मुतअ़ल्लिक कुछ ज़रूरी बातें पेश करना चाहता है।

इन्सान से गुनाह हो ही जाते हैं, मुझ से भी न जाने कितने गुनाह हुए, इन्सान को चाहिए कि रोजाना अपने गुनाह याद करके उस पर पछताए और अल्लाह तआ़ला से मुआफी (क्षमा) मांगता रहे। हम हर नमाज़ के आखिर में अल्लाह तआला से अपने गुनाहों का एतिराफ़ (स्वीकृति) करके मुआफी मांगते हैं कहते हैं "ऐ अल्लाह मैंने अपने ऊपर बड़ा जुल्म किया (यानी मुझ से बहुत से पाप हो गये) और आपके सिवा कोई गुनाहों को मुआ़फ करने वाला नहीं पस आप अपनी खास मग़फ़िरत से मुझे मुआ़फ़ कर दीजिए और मुझ पर रहम कीजिए आप बड़े मुआ़फ़ करने वाले और रहम करने वाले हैं" अगर हम दिल लगा कर नमाज़ पढ़ें तो इन्शाअल्लाह हमारे गुनाह मुआ़फ़ होते रहेंगे। लेकिन जो गुनाह दूसरे बन्दों से तअल्लुक़ रखते हैं वह तौबा इस्तिग़फ़ार से मुआफ नहीं होंगे जब तक वह बन्दा मुआफ़ न कर दे जिसका हक़ मारा है। खूब याद करके जिसका हक़ आप पर हो उसका हक़ अदा करके उससे मुआफ़ी चाह लें, मुझे उम्मीद है आपने ऐसा किया होगा।

लखनऊ से आम तौर पर लोग पहले मदीना मुनव्वरा जाते हैं, आप इस सफर में दुरूद व सलाम खूब पढ़िऐ, मदीना मुनव्वरा पहुंच कर पहले अपने रिहाइश गाह (ठहरने की जगह) जाइये, फिर जल्द से जल्द पाक साफ़ हो कर बा वजू मस्जिदे नबवी में हाजरी दीजिए, मस्जिद में दाखिल होते ही दो रक़अत नमाज मस्जिद में दाखिल होने की पढ़िये, अगर ऐसे वक़्त दाखिल हुए हैं कि कोई फ़र्ज़ नमाज़ हो रही है या होने जा रही है तो उसमें शरीक हो कर नमाज़ के बाद मौक़ा मिलते ही रौज़े पर हाज़िर हो कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बा अदब सलाम पेश करें, फ़िर हज़रत अबू बक्र और फिर हज़रत उमर रज़ि0 को सलाम पेश करें, लोग मुख़्तलिफ किस्म के सलाम पढ़ते हैं जो सलाम चाहें पढ़े मैं तो जो सलाम "अत्तहीयात" में पढ़ा जाता है (अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाही व बरकातुहू) उसी को पढ़ना ज़ियादा अच्छा समझता हूँ इस तरह दोनों बुजुर्गों के सलाम में सादगी बरतें और कहें अस्सलामु अलैक या खलीफ़त रसूलिल्लाहि अबी बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्क, अस्सलामु अलैक या अमीरल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्क।

रौज़े पर हाजिरी के लिए पश्चिम से दो लाइनें चलती है और रौज़े पर सलाम पेश करते हुए पूरब के दरवाज़े से बाहर हो जाती हैं भीड़ के सबब रौज़े के सामने किसी को खड़े होने की इजाज़त नहीं होती है हो सकता है रात में किसी वक़्त भीड़ कम होती हो।

रौज़े की ख़ूबसूरत दीवार में चार ख़ूबसूरत सूराख़ बने हैं इनमें पश्चिम किनारे वाले सूराख का किसी से सामना नहीं होता उसको छोड़ कर बाकी तीन को मवाजेह शरीफ़ कहते हैं इनमें से पश्चिम से आने में पहले सूराख के सामने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम पेश किया जाता है और दूसरे के सामने हज़रत अबू बक्र रज़ि0 को और तीसरे सूराख़ के सामने हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 को सलाम पेश किया जाता है। आपको मदीना मुनव्वरा में आठ रोज़ इस तरह ठहराया जाएगा कि अगर आप हर नमाज़ मस्जिदे नबवी में अदा करेंगे तो 40 फ़र्ज़ नमाज़ें अदा कर लेंगे, आप खूब एहतियात से 40 नमाज़ें अल्लाह के नबी की मस्जिद में अदा कीजिएगा।

रोज़ाना रौज़े पर हाजिर हो कर सलाम पढ़ने का एहतिमाम करें और अल्लाह जितनी तौफ़ीक़ दे सलात व सलाम पढ़ें। मदीने में कियाम के दौरान वक्त निकाल कर उहुद की ज़ियारत को जाएं वहाँ शुहदा के मदफन पर सलाम पढ़ें और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ करके ख़ुद अपनी मग़फ़िरत का सामान करें, मस्जिदे कुबा और मस्जिदे किब्लतैन भी जाएं और वहां नफ़्ल नमाज़ें पढ़ें जन्नतुल बक़ीअ़ तो मस्जिदे नबवी से करीब ही है जन्नतुल बक़ीय भी जाएं और वहां के मदफून मकबूल बन्दों को सलाम पेश करें और उनके लिए दुआए मगफिरत करके सवाब हासिल करें। मदीना मुनव्वरा से रवाना हों तो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का शहर छोड़ने का ग़म हो और दुरूद व सलाम पढ़ते हुए रवाना हों, अब आपका सफर मक्का मुकर्रमा की जानिब है, याद रहे चाहे आप मदीना मुनव्वरा से मक्के का सफर करें या अपने मुल्क से या कहीं से भी आपको मीक़ात पर या मीक़ात से पहले एहराम बाँधना ज़रूरी है, अपने मुल्क से रवानगी के वक्त अपने हवाई अड्डे ही पर एहराम बाँध लें इसलिए कि हवाई सफर ही में मीकात गुज़रेगी और हवाई जहाज़ में एहराम बाँधने में दुश्वारी होगी, मदीना से रवानगी पर मीकात जुल हुलैफा आएगी इसको बिअ़रे अली भी कहते हैं, वहां एहराम बाँधने का अच्छा इन्तिज़ाम है, औरतों और मर्दों के लिए अलग अलग इस्तिंजा ख़ाने और गुस्ल खाने हैं और मस्जिद हैं। वहां बस देर तक रुकती है, सब लोग नहा धो कर या कम से कम वुज़ू कर के मर्द सिले क़पड़े उतार कर, एक सफ़ेद चादर लुंगी की तरह पहन लें एक ऊपर से ओढ़ लें, औरतें अपने जो कपड़े पहनती हैं पहन लें, अब दो रकअत नमाज़ पढ़ें, इस नमाज़ में सर ढका हो, और पहली रकअ़त में सू–रए–फातिहा के बाद

सू–रए–काफिरून मिलाएं, और दूसरी रकअ़त में सू–रए–फातिहा के बाद सू–रए–इख़्लास मिलाएं, सलाम फेर कर मर्द सर खोल दें और औरतें चेहरा खोल दें फिर उम्रे की नीयत करें, अगर किसी सबब से नमाज़ न पढ़ सकें (ऐसा जहाज़ में होता है) तो भी मीकात पर या उससे पहले उम्रे की नीयत करके तल्बिया पढ़ लें नीयत यह करें कि ''ऐ अल्लाह मैं उम्रा करना चाहता हूँ मेरे लिए उम्रा करना आसान फ़रमा फिर तल्बिया पढ़ें, लब्बैक, अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैक़ ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन्निअ़मत लक वल मुल्क ला शरीक लक।

नीयत और तल्बिया दोनों फ़र्ज़ हैं, अब आप एहराम में हैं जो औरतें माहवारी के सबब नापाक हों वह भी नहा धो लें या कम से कम वुज़ू करलें वह इससे पाक तो न होंगी मगर ऐसा करना मुस्तहब है फिर वह भी नीयत करके तल्बिया पढ़लें वह भी एहराम में आजाएंगी, अलबत्ता वह जब तक पाक न होंगी न नमाज़ें पढ़ेगी, न मस्जिदों में दाखिल होंगी न तवाफ़ करेंगी। याद रहे एहराम के बिना मीकात पार करना मना है अगर पार कर लिया और वापस होकर एहराम की नीयत न की आगे बढ़ गये तो सज़ा में एक बकरी हुदूदे हरम में ज़ब्ह करना होगी। यह भी याद रहे कि एहराम के बगैर न उम्रा कर सकते हैं न हज, उम्रा या हज के लिए एहराम फ़र्ज़ है।

अब आप तल्बिया पढ़ते रहें मर्द आवाज़ से औरतें आहिस्ता, दूसरे अजकार भी पढ़ें मगर तल्बिया ज़ियादा पढ़ें। औरतें अपने मामूल के सातिर लिबास (पूरे जिस्म को ढक लेने वाला ढ़ीला लिबास) में रहेंगी अलबत्ता चेहरा खुला रखेंगी, और अजनबी मर्दों से चेहरा छुपाने के लिए पंखे वगैरह की आड़ लेंगी। मर्द सर खुला रखेगे, एहराम की हालत में मियाँ बीवी का मिलाप सख़्त मना है, बाल कतरना उखेड़ना, नाखून काटना आदि मना है, मर्द सिले कपड़े नहीं पहन सकते, अण्डर वियर और मोज़े भी नहीं पहन सकते, जुएं चीलर आदि को मारना भी मना है, खुशबू का इस्तेमाल भी मना है, जो बातें एहराम में मना हैं अगर भूल से गलती से हो जाएं तो उस पर सज़ा है, पहली बात तो यह की खूब एहतियात करें जो बातें एहराम में मना हैं उनसे बचें लेकिन अगर गलती हो जाए तो किसी जानकार से पूछ कर उसका बदल करें, एहराम की हालत में लड़ाई झगड़ा और तमाम गुनाहों से भी बचें, गुनाहों से बचना तो हर हाल में ज़रूरी है, एहराम की हालत में ज़ियादा ज़रूरी जानें।

मक्का मुकर्रमा पहुँच कर अपने ठहराव की जगह हासिल करके अपना ज़रूरी सामान महफ़ूज़ करें, अब जो बहनें माहवारी के सबब नापाक हैं पहले अपने पाक होने का इन्तिज़ार करें, दूसरे लोग पाक साफ हो कर हरम (मस्जिदे हराम) जायें, बा वुज़ू हरम में दुआ पढ़ कर दाख़िल हों, हरम की मस्जिद में दाखिल होने की नमाज़

(तहीयतुल मस्जिद) नहीं पढ़ी जाती बल्कि फौरन तवाफ़ किया जाता है। काबे पर नज़र पड़ते ही आप एक कैफीयत महसूस करेंगे, अगर आपको अरबी दुआ याद है तो वह पढ़लें वरना ज़बान से जो चाहें खूब मांगे, और यक़ीन कीजिए कि आप की दुआ कुबूल हो रही है। अब अगर किसी फ़र्ज़ जमाअत का वक्त हो गया है और नमाज़ होने जा रही है या हो रही है तो उसमें शरीक हो जाइये, वरना तवाफ़ शुरुअ़ कीजिए, तवाफ़ शुरुअ़ करने से पहले तल्बिया बन्द कर दीजिए, हज़रे अस्वद (काले जन्नती पत्थर) पर आइये, यह चौकोर काबे के दक्खिन पूरब कोने पर है, आज कल इतनी भीड़ होती है कि हर एक को उस तक पहुंचना बहुत मुश्किल होता है, इस लिए हजर की सीध में हरी बत्ती जलाई गई है उस बत्ती को देख कर उस की सीध में पहुँच कर काबे की तरफ मुँह करके नीयत कीजिए ऐ अल्लाह मैं तवाफ शुरु कर रहा हूँ मेरे लिए तवाफ़ करना आसान कर दीजिए और कानों तक हाथ उठा कर अल्लाहु अकबर पढ़िए फिर हजर का इस्तिलाम कीजिए और अगर क़रीब है तो उसे चूम लें या हाथ लगा कर हाथ चूम लें, दूर हैं तो उसकी जानिब हाथ उठाएं और बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कह कर तवाफ (काबे के गिर्द चक्कर लगाना) शुरु कर दें, जिस तरफ की सब लोग चल रहे हैं आप भी उधर ही को चलने लगें इस तरह की काबा आपके बायें हाथ की तरफ़ हो।

इस तवाफ़ में मर्दों के लिए दो मज़ीद सुन्नतें हैं। इज्तिबाअ़ और रम्ल, इज्तिबाअ़ यह कि ऊपर वाली चादर दाहिने शाने के नीचे से निकाल कर बायें शाने पर डाल लें और दाहिना शाना खुला रखें यह पूरे तवाफ यानी सातों चक्करों में है, कुछ लोग गलती से हर वक्त इज्तिबाअ़ में रहते हैं यह ठीक नहीं है। रमल यह है कि आप तवाफ के तीन चक्करों में जरा अकड़ते हुए चलें, लेकिन भीड़ के सबब ऐसा न कर सकें तो कोई हरज नहीं, जितना हो सके उतना कर लें यानी तीन चक्करों में ज़रा सीना तान कर खूब अकड़ कर चलें। जब काबे के गिर्द घूम कर हजर पर पहुंचेंगे तो एक चक्कर हो जाएगा, इसी तरह आपको सात चक्कर लगाने हैं, हर चक्कर में जब हजर के सामने आएं उसकी जानिब हाथ उठा कर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर पढ़ें। तवाफ में जो दुआ चाहें मांगे, जो जिक्र चाहें करें, या कुर्आन शरीफ की सूरतें पढ़ें। काबे का पश्चिम दक्खिन कोना रुकने यमानी कहलाता है, रुकने यमानी और हजर के बीच में यह दुआ पढ़ें "रब्बना आतिना फिद दुन्या, हसनतं व फिल आख़िरति हसनतंव व क़िना अज़ाबन्नार" सात चक्कर हो जाएं तो आपका तवाफ पूरा हो गया अब जहाँ सुहूलत हो दो रकअ़त नमाज़ पढ़ें कि यह नमाज़ वाजिब है, अब आप ज़मज़म पर जा कर पेट भर कर ज़म ज़म पियें और खूब दुआऐं करें।

अब आप सई करें इस तरह कि हजरे अस्वद का

दूर या करीब से इस्तिलाम करके यानी उसकी जानिब हाथ उठा कर और अल्लाहु अक्बर पढ़ कर सफा पहाड़ी पर जाएं, वहां की दुआएं याद हों तो दुआएं पढ़ें वरना चौथा कल्मा ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहू लहुलमुल्कु व लहुल हम्द वहवा अलाकुल्लि शैइन क़दीर पढ़ कर सई की नीयत से सई शुरु करें और सफा से मरवा की तरफ चलें, थोड़ी दूर पर दो हरी बत्तियां दिखेंगी उनके बीच मर्द ज़रा दौड़ कर चलें और जो दौड़ न सकें तो जितना हो सके तेज़ चलें बूढ़े मर्द और औरतें अपनी चाल चलें। मरवा पहुंच कर एक शौत (चक्कर) हुआ, फिर मरवा से सफा इसी तरह आएं यह दो शौत (चक्कर) हुए इस तरह सात चक्कर पूरे करें जो मरवा पर पूरे होंगे, सई के चक्करों में भी खूब दुआएं करें। सात चक्कर पूरे होने पर मर्द सर मुंडाएं या सर के बाल कतरवाएं औरतें दूसरी औरतों से या अपने हाथ खुद चोटी पकड़ कर एक उंगुल (उंगली का पोर) बाल काट दें। अब आपका उम्रा पूरा हो गया अल्लाह क़बूल फरमाएं अब अपने कपड़े पहनलें, एहराम की पाबन्दियां ख़त्म हुईं, अब अपनी कियाम गाह जाइये हस्ब तौफीक़ रोजाना तवाफ़ कीजिए, और आठ जिलहिज्जा का इन्तिज़ार कीजिए।

जो बहनें नापाक थीं पाक होने पर वह भी नहा धो कर अपने महरम के साथ हरम जा कर उम्रा पूरा करें।

हमारे यहां के लोग आमतौर पर से तमत्तुअ हज करते हैं उसमें पहले उम्रा किया जाता है फिर आठ जिलिहिज्जा को हज का एहराम बाँध कर हज किया जाता है, उम्रा का बयान हो चुका आठ तारीख़ से हज का बयान इसी अंक के "मक्का मुकर्रमा में हाजियों के पाँच दिन", के बयान में पढ़ें।

कुछ लोग हज्जे इफ़राद और कुछ हज्जे क़िरान भी करते हैं इसलिए उन की भी कुछ ज़रूरी बातें पेश हैं।

हज्जे इफ़राद में मीक़ात पर या मीक़ात से पहले सिर्फ हज की नीयत से एहराम बाँधा जाता है और यह एहराम हज पूरा होने के बाद ही खुलता है, इफ़राद हज करने वाला मक्का मुकर्रमा पहुंच कर उम्रा न करेगा अलबत्ता तवाफ़े कुदूम करेगा यह उसके लिए सुन्नत है इस तवाफ़ में वह न रम्ल करेगा न इज़तिबाअ बल्कि तवाफ़े कुदूम के बाद उसी एहराम में आठ ज़िलहिज्जा का इन्तिज़ार करेगा और फिर हज पूरा करेगा तवाफ़ का तरीक़ा पीछे बयान हो चुका है, अलबत्ता इफ़राद हज करने वाला तवाफ़े कुदूम के बाद हज की सई कर सकता है अगर वह तवाफ़े कुदूम के बाद हज की सई करेगा तो मर्दों को तवाफ़े कुदूम में रम्ल और इज़्तिबाअ भी करना होगा जिस का बयान पीछे आ चुका है इस सूरत में अब वह इस सई के बाद न बाल काट सकता है न मुंडवा सकता है इसलिए कि वह एहराम में है। अब उसको तवाफ़े ज़ियारत के बाद हज की सई न करना होगी। लेकिन अगर वह तवाफ़े कुदूम के बाद हज की सई

शेष पृष्ठ.....28..... पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

सूरः तौबा का नुज़ूल—

जो आयतें हम लोगों के मुतअल्लिक़ नाज़िल हुई थीं वह यह थीः

"अल्लाह मेहरबान हुआ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और मुहाजिरीन और अन्सार पर जो साथ रहे नबी के, नबी के मुश्किल की घड़ी में बाद इसके कि क़रीब था कि दिल फिर जाएं बाज़ों के उनमें से फिर मेहरबान हुआ उन पर बेशक वह उन पर मेहरबान है। रहम करने वाला है जिनको पीछे रखा था, यहां तक की तंग हो गई उन पर ज़मीन बावजूद कुशादा होने के और तंग हो गई उन पर उनकी जानें और समझ गये कि कहीं पनाह नहीं अल्लाह से मगर उसी की तरफ, फिर मेहरबान हुआ उन पर कि वह फिर आये। बेशक अल्लाह ही है मेहरबान, रहमवाला, ऐ ईमान वालो डरते रहो अल्लाह से और रहो साथ सच्चों के"

(सूरः तौबा आयत 117—119)

वल्लाह इस्लाम के बाद सबसे बड़ा इनआम अल्लाह तआला ने मुझ पर यह किया की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रूबरू मुझसे सच्ची बात कहला दी मैं झूठ बोलता तो मेरा भी वही हश्र होता जो झूठ बोलने वालों का हुआ। अल्लाह ने झूठों के हक़ में बहुत ही सख़्त वईद (चेतावनी) फरमाई है—

"अनकरीब वह लोग तुमसे अल्लाह की क़समें खाऐंगे जब उनकी तरफ पलटोगे ताकि उनको दरगुज़र करो, पस तुम उनसे ऐराज़ (बेपरवाई) करो बेशक वह नापाक हैं, उनका ठिकाना दोज़ख है उसका बदला तो उन्होंने कमाया, क़समें खाऐंगे तुम्हारे सामने ताकि तुम राज़ी हो, अगर तुम राज़ी भी हुऐ तो अल्लाह फ़ासिक़ (नाफरमान) लोगों से राज़ी नहीं होगा"

(सूरः तौबा आयत 95—96)

हज़रत कअ़ब रज़ि0 कहते हैं कि पीछे कर दिये जाने का मतलब यह है कि हमारा मामला कुछ दिनों के लिए उठा रखा गया था, उन लोगों की निसबत जिनके ज़ाहिरी हाल पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इकतिफ़ा किया यानी काफी समझा जब उन्होंने क़सम खाई तो उनसे बैअत ली और उनके लिए बख़्शिश चाही और हमारे काम को पीछे कर दिया यहां तक कि अल्लाह तआला उसमें फैसला करे[1]।

हज़रत कअ़ब के वाक़िये में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो मामला इख़्तियार फ़रमाया वह उस मामले से बिल्कुल अलग था, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुनाफ़िक़ीन के साथ किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जानते थे कि वह लोग दिल से आपके साथ नहीं हैं लिहाज़ा उनके साथ तमबीह (चेतावनी) और

---

1. सही बुख़ारी, सही मुस्लिम, सीरत इब्ने हिशाम 2/531—537, जादुल मआद 3/552—557

सज़ा का मामला करना बेफायदा है। उनको तो अपने आमाल की सज़ा आखिरत में मिलेगी, दुन्या में सज़ा देने से उनकी इस्लाह नहीं होगी, लेकिन हज़रत कअब बिन मालिक और उनके दूसरे साथियों के ईमान पर आप को एतमाद (विश्वास) था, उनकी कोताही किसी हद तक लापरवाही और ग़फलत का अंदाज़ रखती थी, लिहाज़ा उनकी इस कमज़ोरी की इस्लाह के लिए सख़्त रवय्या इख़्तियार करना मुनासिब था, लिहाज़ा 50 दिन तक उनको ज़ेहनी तकलीफ से गुज़ारा और यह वही–ए–इलाही के मुताबिक किया। आपके इस अमल से यह बात भी अयाँ हो जाती है।

ग़ज़-ए-तबूक के असरात–

ग़ज़व–ए–तबूक का बड़ा फायदा यह हुआ कि रूमी सलतनत जिसका इक़बाल बामे उरूज़ पर था और अरबों पर उनका बड़ा रोब और खौफ़ था मुसलमानों के ईमान व यकीन और अज़्म (संकल्प) जुरअत और हौसला व शुजाअत के सामने शिकस्तादिल और मोहतात (सावधान) हो गई, हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रहमतुल्लाह अलैहि लिखते हैं–

"अरब द्वीप के उन क़बाएल तथा विजेता और शासक क़बाएल (जो रूमी बादशाहों से सम्बन्धित और उसके मातहत थे) के दिलों पर रोब वा दाब क़ायम हो गया और उसके ज़रिए उनको यह मौक़ा मिला कि दीने इस्लाम के मसअले पर गम्भीरता से ग़ौर करें और यह महसूस करें कि वह कोई पानी का बुलबुला नहीं है जो थोड़ी देर के लिए पानी की सतह पर उभरता है और फिर देखते ही देखते ग़ायब हो जाता है।"

सारांश यह कि यह ग़ज़वः सीरते नबवी और दावते इस्लामी की तारीख में खास अहमीयत का हामिल (वाहक) रहा है और इससे उन उद्देश्यों की पूर्ति हुई जो मुसलमानों और अरबों के हक़ में बहुत दूर रस है और जिनका तारीख इस्लाम के तसलसुल (निरन्तरता) और आगे पेश आने वाले वाक़िआत पर गहरा असर पड़ा[1]।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदीना पहुँच कर मुसलमानों की हिफाज़त के लिए जो तदबीरें और दुश्मनों से जो मुकाबले करने पड़े जिनकी शुरुआत सन् 2 हिजरी में मारक–ए–बदर से हुई और वह सिलसिला सन् नौ हिजरी में तबूक के वाक़िये पर ख़त्म हुआ। इस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नुबूअत की पूरी 23 साला मुद्दत में सिर्फ 8 साल की मुद्दत दुश्मनों से जंग करने के मुआमलात में गुज़ारी। शुरु के 14 साल की मुद्दत सिर्फ सब्र व बर्दाश्त में गुज़ारी और सिर्फ पैगामे हक़ पहुँचाने और उस हक़ की पेशकश करने पर इक्तिफ़ा की फिर जब बाकाएदा मुकाबले की ज़रूरत सामने आयी तो उसकी ज़िम्मेदारी अंजाम दी तो सिर्फ 8 साल की मुद्दत रही और कामयाबी मिली और मुकम्मल सरबुलन्दी पर ख़त्म हुई। ग़ज़वात का सिलसिला इस पर ख़त्म हुआ

1. नबी–ए–रहमत, पृ0 490

और मुसलमानों को इस्लामी उसूलों के मुताबिक सामाजिक ज़िन्दगी का निज़ामे अमल क़ायम करने में दुश्मनों की शरारतों से जो रुकावट होती थी ख़त्म हुई।

मस्जिदे ज़िरार–

मुनाफिकीन हमेशा इस फिक्र में रहते थे कि मुसलमानों में किसी तरह फूट डाल दो, एक मुद्दत से वह इस ख़्याल में थे कि मस्जिदे कुबा के तोड़ पर वहीं एक और मस्जिद इस हीले से बनायें कि जो लोग कमज़ोरी या किसी और वजह से मस्जिदे नबवी न पहुंच सकें यहां आकर नमाज़ अदा कर लिया करें। 'अबू आमिर जो अन्सार में से ईसाई हो गया था, उसने मुनाफिकीन से कहा कि तुम सामान करो मैं क़ैसरे रोम के पास जाकर वहां से फौजें लाता हूँ कि इस मुल्क को इस्लाम से पाक कर दूँ। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तबूक तशरीफ ले जाने लगे तो मुनाफ़िक़ीन ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में आकर अर्ज़ किया कि हमने बीमारों और माजूरों के लिए एक मस्जिद तैयार की है। आप चल कर उसमें एक दफा नमाज़ पढ़ा दें तो मकबूल हो जाए। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "इस वक्त मैं मुहिम पर जा रहा हूँ, जब तबूक से वापस फिरे तो मालिक बिन मअन बिन अदी को हुक्म दिया कि जा कर मस्जिद में आग लगा दें", उसी मस्जिद के बारे में यह आयतें उतरी हैं–

"और वह लोग जिन्होंने एक मस्जिद ज़िरार और फूट डालने और कुफ़्र की गरज़ से तैयार की और इस ग़रज़ से कि जो लोग पहले से खुदा और रसूल से लड़ते हैं उनको एक कमीनगाह (घात स्थल) हाथ आए और वह क़सम खाते हैं कि हमने सिर्फ भलाई के लिहाज़ से ऐसा किया और खुदा गवाही देता है कि यह झूठ कहते हैं, मुहम्मद तू कभी उस मस्जिद में जा कर न खड़ा हो वह मस्जिद जिसकी बुन्याद पहले ही दिन से परहेज़गारी पर रखी गयी है वह इस बात की जियादा मुस्तहिक़ है कि तू उसमें नमाज़ पढ़े वहां ऐसे लोग हैं जिनको सफाई महबूब है और खुदा सफाई पसन्द करने वालों को चाहता है"। (सू–रए–तौबा–108)

ज़कात की फरज़ीयत–

उसी साल सन् 9 हिज्री में ज़कात का हुक्म नाज़िल हुआ। ज़कात का मतलब यह था कि शुखहाल शख़्स जब उसकी खुशहाली एक खास हद तक पहुंच जाये तो वह अपने माल में से एक हिस्सा निकाल कर ग़रीबों की मदद करे और उसको दूसरे फराएज़ की तरह एक फर्ज़ क़रार दिया गया और इस्लाम के पाँच अरकान में से चौथा रुकन करार पाया। पहला रुकन अक़ीद–ए–तौहीद, दूसरा रुकन नमाज़, तीसरा रुकन रमज़ान के रोज़े और चौथा रुकन ज़कात और पाँचवा रुकन हज की इस्तिताअत हो तो उम्र में एक मरतबा हज करना।

ज़कात खुशहाली हो तो ग़रीबों के लिए अपने उस बढ़े हुए माल से ढाई फीसदी के करीब रक़म निकालना और ग़रीबों में बाँटना

ज़रूरी और फ़र्ज़ हो जाता है। इस तरह इस्लाम ग़रीबों के साथ हमदर्दी और ख़ैरख्वाही करने की खुसूसीयत रखने वाला मज़हब करार पाता है। इसमें दूसरे इंसानों को अपना भाई समझते हुए हमदर्दी करने की खुसूसीयत के अलावा ये खुसूसीयत भी है कि अपने परवरदिगार की अता की हुई नेमतों पर उसका शुक्र किया जाये और उसको उसकी इबादत क़रार दिया गया है।

इस्लाह व दावत के काम में सख़्त हालात का खात्मा–

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक ज़िन्दगी का यह 62 वां साल था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्र की 40 साला मुद्दत में जो नुबूअत मिलने से पहले की थी ऐसी सुथरी और बेदाग़ और आला सिफात की ज़िन्दगी गुज़ारी कि आपके अज़ीज़ और अहले वतन पूरी तरह तअरीफ़ करने वाले और पसन्द करने वाले थे। फिर नुबूअत मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दूसरों की इस्लाह का काम शुरु किया। इसमें लोगों की मुख़ालिफ़त से साबिक़ा पड़ा और बड़ी तकलीफें उठानी पड़ीं। इसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के 23 साल गुज़रे उनमें 14 साल सब्र व बर्दाश्त के साथ दीन की तबलीग़ और दावत में गुज़रे और इस बीच जो तकलीफें दी गयीं उनको बर्दाश्त किया और जवाब नहीं दिया और सब्र करते रहे और जब क़त्ल कर दिये जाने की साज़िश हुई तो वतन छोड़ कर दूसरे शहर में चले गये। और जब वहां दुश्मन के हमले का ख़तरा हुआ तो हमले का जवाब देने की इजाज़त मिली और दुश्मन की तरफ से कार्यवाई मज़ीद ख़तरनाक हुई तो खुलकर जंग करने की इजाज़त मिली और मदीना मुन्तकिल होने के बाद 10 साला मुद्दत में से आख़िरी 8 साल में से सिर्फ 7 साल की मुद्दत ऐसी गुज़री कि मुसल्लह तरीक़े से मुकाबला करने पर मजबूर होना पड़ा। इसमें भी दो साल मुआहिदे अमन और सुलह के गुज़रे। इस ऐतबार से सिर्फ 6 साल दुश्मनों से मुकाबले में गुज़रे और उन मुकाबलों में मुसलमानों को उमूमन कामयाबी मिलती रही और आपकी दावते हक़ का काम बढ़ता और कामयाब होता रहा। यहां तक की आपको पूरी तरह ग़लबा हासिल हो गया और मुखालिफ़ों की ताक़त टूट गयी। जंगों के 6 वर्षों में आप का जो रवय्या रहा वह आपकी अमन पसन्दी और रहम दिली की आला मिसाल है। इस पूरी मुद्दत में इन्सानी जान के नुक़सान के लिहाज़ से जो नक़्शा सामने आता है वह अमन के मग़रिबी दावेदारों यानी यूरोप वालों के लिए यक़ीनन एक अजीब व ग़रीब इन्किशाफ (प्रकटन) बन सकता है।

वह यह कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रहनुमाई में दुश्मनों से मुक़ाबला करने की 82 कोशिशों में (जिसमें 28 में आपने खुद क़ियादत की) सिर्फ 458 मुसलमान और 459 मुख़ालिफीन काम आए, इन तमाम मुकाबलों में सिर्फ 11 मुसलमान क़ैद हुए, अलबत्ता

मुखालिफीन के 6546 अफराद क़ैदी बनाए गए जो फिदये से या फिदये के बग़ैर आज़ाद कर दिये गए और बिला किसी शर्त छोड़े गए उनकी तादाद 6347 है। और उनके साथ कोई इन्तिक़ामी बदले की कार्यवाई नहीं की गई। ज़ख़मियों की तादाद भी फरीक़ैन को मिला कर 300 के क़रीब हुई[1] सख़्त मिजाज़ दुश्मन क़ैदियों के साथ भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ से बहुत नरम मामला किया गया और यह इस्लाम की विशेषता है कि उसमें जंग की कार्यवाई अपनी हुकूमत कायम करने के लिए नहीं बल्कि हक़ व सदाक़त की ज़िन्दगी क़ायम करने के लिए होती है। इसमें दुश्मन अगर खुद हक़ को लागू करना कबूल कर ले तो मुसलमान उससे टकराते नहीं, उसको उसका मौक़ा देकर अलग हो जाते हैं और उससे सिर्फ एक फिदया लेते हैं, दूसरी सूरत में दुश्मन अगर हक़ को कुबूल न करे और इस्लाह व हक़ को लागू करने से रोके तो उसके लिए मुसलमानों को जब्र और ज़रूरत पड़े तो जंग की हिकमते अमली इख़्तियार करना होती है। कुर्आन मजीद में आता है:—

"यह वह लोग हैं अगर हम ज़मीन में उनके पांव जमा दें (यानी हुकूमत अता करें) तो यह (अपने रब की इबादत यानी) नमाज़ क़ायम करेंगे और (गरीबों की माली मदद में) ज़कात देंगे और अच्छे कामों का हुक्म करेंगे। तमाम कामों का अंजाम अल्लाह के इख़्तियार में है।"

(सूराः हज—41)

और जंग की इजाज़त और हुक्म देने के सिलसिले में इस तरह फरमाया गया कि "उनसे लड़ो यहां तक कि फितना यानी दीने हक़ पर अमल करने में जो रुकावट डाली जा रही है वह दूर हो जाए और दीन का वह तरीक़ा जो अल्लाह तआला का है क़ायम हो जाए, अगर यह रुकावट डालने से रुक जाएं (तो तुम भी रुक जाओ) हमले के लिए आगे बढ़ना तो सिर्फ ज़ालिमों ही के खिलाफ किया जायेगा।" (सूरः बकरा— 193)

आखिरी नबी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जामे कमालाते शरीअत और जामे सिफात इंसानी ज़िन्दगी को पेशे नज़र रखते हुए पैग़ामे इलाही पहुंचाया और रहनुमाई की और जब आपको ताक़त के इस्तेमाल पर मजबूर कर दिया गया तो उस पर भी अमल किया जिसकी ज़रूरत और अहमीयत अल्लाह तआला ने अपने कलाम में इस तरह बयान की—

"और अगर खुदा लोगों को, एक फरीक को उसके मुकाबले पर दूसरे फरीक से दूर न करता तो दूसरे लोगों के इबादत खाने और मुसलमानों की मस्जिदें जिनमें खुदा का बहुत सा ज़िक्र किया जाता है वीरान हो चुकी होती।" (सूराः हज—40)

और आपने अपने बाद वालों पर भी इसी की ज़िम्मेदारी डाली है कि वह इंसानों को ख़ैर के कामों और ख़ैरख्वाहाना ज़िन्दगी की तरफ लाने का

शेष पृष्ठ .....19..... पर

1. मैगज़ीन "सफ़ा टाइम्स" नई देहली जिल्द नं0 2 शुमारा नं0 5, अप्रैल—जून 2006 पृ0 10

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

दीर्घायु एवं बड़े बूढ़ों का व्यक्तित्व श्रद्धा का केन्द्र होता है–

बूढ़ा होना मुसलमानों के समाज तथा उनके जीवन में कोई दोष अथवा अपराध नहीं वरन् आयु में वृद्धि एवं बुढ़ापे के साथ साथ मनुष्य का व्यक्तित्व अधिक आदरणीय, और सम्मान तथा श्रद्धा का केन्द्र बनता चला जाता है, और उनको अधिक सेवा का पात्र एवं माननीय समझा जाने लगता है। यदि कोई अपरिचित व्यक्ति किसी मुसलमान के घर मेंजाए तो वह देखेगा कि एक वृद्धायु एवं बड़े बूढ़े बुजुर्ग जो इस ख़ानदान के दूर के रिश्तेदार या मुहल्ला बस्ती के कोई आलिम अथवा इमाम थे, मुसल्ले[1] पर बैठे मनन, चिन्तन तथा जप में व्यस्त हैं। परिवार के छोटे बड़े उनका आदर करते हैं, प्रातः उनके पास सलाम करने और उनसे दुआ[2] लेने के लिए जाते हैं घर का कोई व्यक्ति अथवा नौकर उनके साथ अनादरपूर्ण व्यवहार नहीं कर सकता समय पर नाश्ता, खाना प्रस्तुत किया जाता है और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है। यही दशा घर के अन्दर है कि कोई दीर्घायु महिला या बड़ी बूढ़ी कुर्आन मजीद पढ़ने अथवा जप में व्यस्त हैं। घर तथा बाहर के बच्चे और घर की महिलाएं एवं बच्चियां उनसे फूक छुड़ाने जाती हैं। वह उनके सिरों पर हाथ फेरती हैं और दुआ देती हैं। उनका होना परिवार तथा मुहल्ले के लिए शुभ समझा जाता है और यह विश्वास है कि उनकी दुआओं से बलायें (आपत्तियां) टलती हैं। यदि उनसे कोई खानदानी रिश्ता न हो तब भी अपनी अपनी आयु के अनुसार उन्हें दादी, नानी, मौसी, फूफी कहा जाता है।

विधवा का दूसरा विवाह तथा भारतीय मुसलमानों का विशिष्ट मामला–

विधवा का दूसरा विवाह, धार्मिक दृष्टिकोंण से और मुसलमानों के समाज तथा रिवाज में कभी बुरा एवं आपत्तिजनक कार्य नहीं समझा जाता था। यह उनके नबी की सुन्नत थी और प्रत्येक युग में महान विद्वान, बुजुर्ग, महानुभाव एवं विराट सम्राट निःसंकोच विधवा स्त्रियों से स्वयं विवाह करते थे और अपनी विधवा बहनों तथा बेटियों का दूसरा विवाह करते थे। हिन्दुस्तान की कई तैमूरी[3] महिलाओं तथा मुग़लिया खानदान की कई बेगमात ने विधवा होने के पश्चात दूसरा विवाह किया और इतिहास में उनके नाम सम्मान तथा आदर के साथ लिए गये हैं। जहां तक मेरी जानकारी है, मुहम्मद शाही काल (1719–1748) ई0 जैसा कि ख्वाफ़ी खाँ के उल्लेख

---

1. सुद्ध एवं पवित्र दरी अथवा चटाई जिस पर नमाज़ पढ़ी जाती है। (अनुवाद)
2. आशीर्वाद
3. तैमूर वंशज से सम्बन्धित (अनुवाद)

से ज्ञात है) से भारत के रईस तथा उच्चकोटि के घरानों में इसको बुरा एवं दूषित कार्य और स्त्री की पवित्रता एवं सम्मान के विरुद्ध समझा जाने लगा। यहां तक कि जो भी इसका साहस करता था उसका ख़ानदान से वहिष्कार कर दिया जाता था और उसे बुरी तथा अपमानित दृष्टि से देखा जाता था। कभी कभी तो स्त्री एवं पुरुष दोनों को नगर छोड़ने पर बाध्य होना पड़ता है। तेरहवीं शताब्दी हिजरी का प्रथम चौथाई तथा उन्नीसवीं शताब्दी ईसवी के आरम्भ में हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध धर्म सुधारक एवं नेता हज़रत सय्यद अहमद शहीद रायबरेलवी ने इस इस्लाम के प्रतिकूल विचारधारा के विरुद्ध सुधारात्मक आन्दोलन आरम्भ किया और स्वयं इस रस्म को तोड़ कर और उनके दूसरे साथियों एवं श्रद्धालुओं ने व्यावहारकि रूप से इस निर्जीव सुन्नत को जीवित और इस विचारधारा का कार्यान्वित रूप से खण्डन किया, कि यह क्रिया सौजन्य एवं शिष्टता और मान, मर्यादा की भावना के विरुद्ध हैं उस समय से मुसलमान खानदानों में यह क्रिया इतनी घृणाप्रद तथा असंगत नहीं रही जितनी एक दो शताब्दी पूर्व थी। अब भी यद्यपि बहुत सी मुसलमान विधवायें अपनी इच्छा अथवा किसी विवशता के कारण दूसरा विवाह किये बिना रहती हैं परन्तु दूसरे विवाह का अच्छा खासा रिवाज़ पाया जाता है।

सलाम करने का रिवाज तथा उसके विभिन्न रूप–

मिलने जुलने, आने जाने में सलाम का रिवाज है। यह मुसलमानों का अन्तर्राष्ट्रीय एवं अन्तरधार्मिक सलाम है। सलाम करने वाला "अस्सलामु अलैकुम" कहता है, जिसका अर्थ है "तुम पर खुदा की ओर से सलामती हो अर्थात ईश्वर तुम्हें स्वस्थ एवं सकुशल रखे"। इसका उत्तर है, व–अलैकुम्मस्सलाम" अर्थात् तुम पर भी सलामती हो। अनेक नागरिक क्षेत्रों में विशेषकर अवध के पुराने क़स्बों तथा लखनऊ के पुराने खानदानों में सलाम के बजाय "आदाब अर्ज़" का रिवाज है। छोटे बड़ों को झुक कर तसलीमात अर्ज़ करते हैं, और कई बार झुककर आदाब बजा लाते हैं। इसको फ़र्शी सलाम भी कहा जाता है। हैदराबाद में अब भी इसका रिवाज है। बड़े, छोटों के इस सलाम के उत्तर में "जीते रहो" कहते हैं, या तसलीम कहकर जवाब देते हैं, सलाम के बाद "मुसाफ़हा[1]" का भी रिवाज है। कुछ लोग दोनों हाथों से करते हैं और कुछ एक हाथ से। अब एह हाथ से मुसाफ़हा करने का अधिक प्रचलन है। यात्रा करके आने की दशा में और ईद, बकरईद में "मुआनिक़ा[2]" का भी प्रचलन है।

उठते बैठते खुदा का नाम–

मुसलमानों की ज़बान पर कुछ ऐसे वाक्य एवं शब्द सहज रूप से चढ़े हुए हैं और वह अनेक दैनिक जीवन में ऐसे प्रविष्ट है कि आलिम तथा जाहिल, छोटे बड़े, स्त्री तथा पुरुष और वह लोग भी जिनमें धार्मिक प्रभाव का आभाव होता है, उठते बैठते

1. हाथ मिलाना
2. गले मिलना (अनुवाद)

उनको अदा करते हैं। इन वाक्यों तथा शब्दों में खुदा की बड़ाई और वहदानियत[1] की झलक पाई जाती है और इनकी वजह से अनायास भी खुदा का नाम मुसलमानों की ज़बान पर आता रहता है। यथा कृतज्ञता अथवा कृपा प्राप्त होने के अवसर पर "अल–हम्दु–लिल्लाह" (सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है), प्रसन्नता या प्रसन्नता प्रकट करने के अवसर पर "माशा अल्लाह" (अल्लाह की मेहरबानी और इरादे से) किसी कार्य का निश्यच या किसी को वचन देते समय "इन्शा अल्लाह" (यदि खुदा चाहेगा), किसी दुर्घटना अथवा हानि के अवसर पर "इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" (हम सब अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही के पास पलट कर जाने वाले हैं), अप्रसन्नता व्यक्त करने या चिन्ता के अवसर पर "ला–हौल–व–ला–कूवता –इल्लाह–बिल्लाहि" (किसी बुरी वस्तु से सुरक्षा और किसी अच्छी वस्तु की शक्ति अल्लाह के आदेश के बिना नहीं), विस्मय अथवा आश्चर्य के अवसर पर सुबहानल्लाह (अल्लाह दोष रहित एवं पवित्र है), मुसलमान जब भोजन करना आरम्भ करता है तो "बिस्मिल्लाह" (अल्लाह के नाम से) और खा चुकता है तो "अल–हम्दु–लिल्लाह" कहता है। यदि कोई अपने साथ खाते समय दूसरे को आमन्त्रित करता है और दूसरा व्यक्ति किसी कारण वश सम्मिलत नहीं होना चाहता है, तो उत्तर इन शब्दों में देता है, "बारक–अल्लाह" (अल्लाह बरकत दे), किसी को छींक आये तो वह "अलहम्दुलिल्लाह" कहता है, पास वाला अर्थात इन शब्दों को सुनने वाला कहता है, "यर हमुकल्लाह" (अल्लाह तुम पर दया करे) और छींकने वाला फिर इसके उत्तर में कहता है, "यहदी–कुमुल्लाह–व–युसलेह बालकुम" (अल्लाह तुम को सीधे मार्ग पर चलाये और तुम्हारी दशा ठीक रखे)

आने जाने वालों का सत्कार एवं उसके तरीके–

अतिथियों और आने जाने वालों की पान द्वारा सत्कार करने की सामन्य प्रथा है और यह हिन्दुस्तान की पुरातन सभ्यता है, जिसका उल्लेख आठवीं शताब्दी हिजरी (चौदहवीं शताब्दी मसीही) के बुजुर्गों की सभाओं तथा ख़ानक़ाहों (गुरु कुलों) के विवरण में भी आता है। ऐसे तो इसका रिवाज समस्त भारत वर्ष में है परन्तु उत्तर प्रदेश, बिहार तथा दक्षिण में अधिक है। अवध (वर्तमान उ0प्र0) में पान की गिलोरियां अति कोमलता एवं मृदुलता से बनाई जाती हैं। पान की डिबियां भी सुन्दर, चित्रित तथा विभिन्न आकार की होती हैं। पान के बटवों के विभिन्न काट और नमूने प्रचलित हैं और उनमें भी तराश खराश हुई है। तम्बाकू भिन्न–भिन्न प्रकार की प्रयोग की जाती है और उसे सुगन्धित, तेज तथा मध्यवर्ती बनाने में यहां बड़े बड़े प्रयोग किये गये हैं और विभिन्न प्रकार की तम्बाकू जिनको जर्दा तथा सुर्ती भी कहते हैं, प्रचलित हैं, इसमें लखनऊ ने बड़ा नाम पैदा किया है। हुक्के का रिवाज कम होता जा रहा है अधिकतर उसका

1. अद्वैतवाद अर्थात एक और केवल एक खुदा का होना (अनुवाद)

स्थान सिगरेट तथा सिगार ने ले लिया है, फिर भी वह पुरातन सभ्यता तथा रहन सहन का एक प्रतीक है, और इससे बहुत सी पुरातन कथायें, शिष्टाचार तथा सभ्यताएं सम्बद्ध हैं।

इत्र एवं सुगन्ध का शौक़ और उसमें विशिष्ट स्थान-

इत्र के प्रति हिन्दुस्तानी मुसलमनों की विशेष अभिरुचि रही है और शरीअत एवं सुन्नत ने भी उनकी इस अभिरुचि में योगदान दिया है[1]। हिन्दुस्तानी मुसलमानों ने इत्र साज़ी में एक विशिष्ट स्थान पैदा किया है और भिन्न भिन्न प्रकार के इत्रों का आविष्कार किया। इसी कारण इस सम्बन्ध में भारत वर्ष ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है।

1. अल्लाह के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्र एवं सुगन्ध की विशेष रुचि थी। जुमा तथा ईदों के अवसर पर सुगन्ध का प्रयोग मसनून (सुन्नत) है। हिन्दुस्तान इत्र एवं सुगन्ध के लिए पहले भी प्रसिद्ध था। रसूलुल्लाह सल्ल0 ने अपने अन्तिम हज के अवसर पर जिस सुगन्ध को प्रयोग किया उसके बारे में पुस्तकों में आता है कि वह हिन्दुस्तान से आई थी।

❑❑

जगनायक.....

काम बराबर जारी रखें और इसको वही काम बताया जिसके लिए अम्बिया मबऊस किये जाते रहे हैं और दीन का वह नक्शा पेश किया जो क़यामत तक आने वाले इंसानों के लिए सिर्फ नज़ात का ज़रिया ही नहीं बल्कि उनकी सहूलत के लिहाज़ से अमल के लाएक़ भी है और इसकी हिदायत आपको आखिरी और जामे व माने (व्यापक व वाहक) नबी के ज़रिए दीं।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

3. हज़रत मूसा अलै0 के बाद कुछ अर्से तक बनी इस्राईल का काम दुरुस्त रहा फिर जब उनकी नीयत बिगड़ी तब उन पर एक ग़नीम काफिर बादशाह जालूत नाम का मुसल्लत हुआ, उनको शहर से निकाल दिया और लूटा और उनको पकड़ कर बन्दी बनाया, बनी इस्राईल भाग कर बैतुल मक़्दिस में जमा हुए उस वक्त हज़रत शमूईल अलैहिस्सलाम पैग़म्बर थे उनसे दरख़्वास्त की कि कोई बादशाह हम पर मुकर्रर कर दो कि उसके साथ होकर हम अल्लाह के रास्ते में जिहाद करें।

4. तालूत की कौम में पहले से सलतनत थी गरीब मेहनती आदमी उन बनी इस्राईल की नजर में सलतनत के काबिल नजर न आये, और माल व दौलत की वजह से अपने आपको सलतनत के लायक ख़्याल किया नबी ने फरमाया कि सलतनत किसी का हक नही और सलतनत की बड़ी लियाक़त है अक़्ल और बदन में जियादती और वुसअत होनी जिसमें तालूत तुम से अफज़ल है।

फायदाः बनी इस्राईल ने जब यह सुना तो फिर कहा पैग़म्बर से कि इसके अलावा कोई और दलील भी उनकी बादशाहत पर दिखला दो ताकि हमारे दिल में कोई शक व शुब्हा न रहे, नबी ने अल्लाह से दुआ कि और तालूत की सलतनत की दूसरी निशानी बयान फरमा दी गयी।

❖❖❖

इख़्लास और उसके बरकात व फायदे

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी —मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

जन्नत का सौदा–

एक हदीस में आता है, अनुवादः अल्लाह का सौदा महंगा है, अल्लाह का सौदा जन्नत है, लेकिन सौदा महंगा है, इस लिए आदमी को हमेशा अपनी पूंजी देख लेनी चाहिए, कि खोटी तो नही है, इसलिए कि खोटा सिक्का कहीं नहीं चलता है, चाहे बाजार हो, या बैंक, ऐसे ही जाली नोट कहीं नही चलते, जो उसको लेकर जाता है खुद पकड़ा जाता है और उससे पूछ–ताछ भी होती है ऐसे ही ईमान लाने के बाद आमाल में नीयत के बारे में पूछताछ होगी कि आप अमल किस नीयत से कर रहे हैं चूंकि अल्लाह को खालिस नीयत ही पसंद है और वह नीयत यह है कि अल्लाह तआला की रिजा व खुशनूदी चाही जाये, कि अस्ल अल्लाह की पसंद है, और जिस को अल्लाह पसंद करता है उसको ईमान अता फरमाता है, तो जब आदमी ईमान के मुताबिक अच्छे काम करता है तो पसंद बढ़ती जाती है और जो आमाल खालिस अल्लाह की रिजा के लिए किये जाते हैं वह काबिले कबूल, वरना वह मुँह पर मार दिये जाने के लायक़ हैं।

हमारे मुल्क में मिलावट कितनी हो रही है हम जान सकते हैं, तेल, घी, फल, तरकारियाँ, सब में मिलावट, कोई अस्ली नहीं, लेकिन हम लोगों का हाल यह है कि हम देसी और अस्ली ढूँढ़ते और पसंद करते हैं, नकली न ढूंढ़ते और न पसंद करते हैं तो इसी प्रकार हमारे आक़ा व मालिक भी सही और खालिस ही को पसंद करते हैं मसलन अगर हम नमाज़ दिखावे के लिए, या दबाव में पढ़ रहे हैं तो अल्लाह इसको पसंद नहीं करेंगे और कहेंगे कि जाओ जिसके लिए पढ़ी उसी से इसका अज्र व सवाब ले लो, वह राजी न होंगे, तो मालूम हुआ कि ज़िन्दगी के हर क्षेत्र से सम्बन्ध रखने वाले जितने भी काम हैं उसमें जितनी नीयत दुरूस्त करते जायेंगे उतनी तरक्की होती जायेगी, इसी को नीयत की बरकत कहते हैं, इसी वजह से बाज मर्तबा कम अमल वाला जियादा अमल वाले से आगे बढ़ जाता है इसलिए कि उसकी नीयत खराब थी और बहुत सी नीयतें सम्मिलित हो गयी थीं, मालूम हुआ कि यह चीज़ बड़ी मुश्किल से हासिल होती है, अल्लामा इक़बाल रह0 ने कहा था।

"बराहीमी नज़र पैदा मगर मुश्किल से होती है।
हवस छुप छुप के सीनों में बना लेती है तस्वीरें।।"

यानी बड़ी मुश्किल से वह नज़र पैदा होती है जिसमें खालिस अल्लाह को राजी करने के लिए काम किया गया हो, वरना आदमी के दिल में भांति भांति की बातें आने लगती हैं जैसे कि मेरा नाम होगा, शोहरत होगी, लोग

शेष पृष्ठ .....26....पर

मक्का मुकर्रमा के पाँच दिन

—इदारा

नोट—अगर आप मक्का मुकर्रमा पहुँच कर 15 दिन ठहरने का समय पाते हैं तो आप अब मुक़ीम हैं इस बीच मिना, अरफात और मुज़दल्फा जाने में चूंकि यह जगहें सफर की नहीं हैं वहां आप मुक़ीम ही हरेंगे और मिना, मुज़दल्फा में नमाज़ें कस्र न करेंगे अरफात का बयान 9 ज़िलहिज्जा में आयेगा, लेकिन अगर आप मक्का मुकर्रमा पहुँच कर 15 दिन ठहरने का समय नहीं पाते हैं तो आप मुसाफिर रहेंगे।

8 ज़िलहिज्जा-

आप सभी हाजियों को एहराम की हालत में मिना जाना है और वहीं पूरा दिन और आने वाली रात गुज़ारना है इफराद, व क़िरान वाले तो पहले से एहराम में हैं तमत्तो वाले गुस्ल करें या कमसे कम वुज़ू करें और मर्द एहराम की दो चादरें पहले की तरह पहन लें, औरतें अपने मामूल के लिबास में रहें, फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ें इस नमाज़ में मर्द सर ढ़के रहें, पहली रकअ़त में सू—रए—फातिहा के बाद सू—रए—काफिरून और दूसरी रकअ़त में सू—रए—फातिहा के बाद सू—रए—इख़्लास पढ़ें सलाम फेर कर मर्द सर खोल दें औरतें चेहरा खोल दें फिर नीयत करें ऐ अल्लाह मैंने हज का एहराम बाँधा है, मेरे हज को आसान करदे, फिर मर्द तेज़ जावाज़ से और औरतें धीमे धीमे लब्बैक पढ़े।

माहवारी से नापाक औरतें भी नहा धो कर वुज़ू कर लें वह इससे पाक तो न होंगी मगर ऐसा करना मुस्तहब है फिर वह भी हज की नीयत करके धीमे धीमे तल्बिया पढ़ें। तल्बिया यह है लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैक लाशरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन्निअ़मत लक, वल मुल्क लाशरीक लक (तल्बिया किसी जानकार से सीख लें), अब बराबर तल्बिये का विर्द रखें, माहवारी से नापाक बहनें नमाज़ न पढ़ेंगी, न तवाफ करेंगी, न मस्जिदों में दाखिल होंगी, मगर और सारे अरकान अदा करेंगी, याद रहे एहराम के बाद औरतें चेहरा न ढ़ेकेंगी और मर्द सर न ढ़केंगे, अजनबी मर्दों से औरतें पंखे वगैरह से चेहरे की ओट ले लिया करें (यह भी याद रहे कि एहराम के बगैर न उम्रा हो सकता है और न हज।

9 ज़िलहिज्जा-

फज्र की नमाज के बाद आप अपने इन्तिजाम से या मुअल्लिम के इन्तिजाम से अराफात जायें, तल्बिया खूब पढ़ें जुहर की नमाज़ मुम्किन हो तो मस्जिदे नम्रा में अदा करें, यहाँ एक अज़ान और दो इक़ामतों से जुहर और अस्र एक साथ पढ़ी जायेंगी और कस्र पढ़ी जायेंगी (अगर हनफी मस्लक पर अमल करते हैं और मुसाफिर नहीं हैं) और अराफात में अगर दो नमाज़ें जमाअ़त से अदा नहीं की हैं तो जुहर की नमाज़ जुहर के वक़्त में, और अस्र की नमाज़ अस्र के वक़्त में पढ़िए, अरफात का वुकूफ (ठहरना) फर्ज है उसकी कद्र कीजिए, और पूरा वक्त लग

कर गिड़गिड़ा कर रो रो कर दुआ में गुज़ारें, सूरज डूबने पर मग़रिब की नमाज़ अदा किये बिना खुद से या मुअल्लिम के इन्तिजाम से मुज्दल्फा रवाना हो जाइऐ, मुज्दल्फा पहुंच कर एक अज़ान और दो इकामतों से मग़रिब व इशा अदा कीजिए और फिर आराम कीजिए, अल्लाह आपको तौफीक दे तो उस रात जितनी इबादतें और दुआयें कर सकें उसमें कमी न कीजिए, फज्र की नमाज़ पढ़ कर थोड़ी देर ठहरिए कि ठहरना वाजिब है, मुज्दल्फा ही में एहतियातन 49 से कुछ ज़ियादा कंकरियाँ चने के बराबर चुन कर महफूज़ कर लीजिए।

10 ज़िलहिज्जा-

मिना पहुंच कर आप जमरात जाइये और सिर्फ बड़े शैतान को सात कंकरियाँ मारिये और अब तल्बिया न पढ़िये, एक बार में एक कंकरी बिस्मिल्लाहि, अल्लाहु अकबर कह कर मारिए, इसी तरह सातों कंकरियां मारिये, अब आकर अगर आपका हज़ तमत्तो या क़िरान है तो कुर्बानी कीजिए, हज इफराद किया है तो आप पर कुर्बानी नहीं है मगर नफलन कर सकते हैं, बेहतर होगा कि कुर्बानी का टिकट खरीद लें या किसी मोतबर तन्जीम को वकील बना दें, जब इतमीनान हो जाये कि आप की कुर्बानी हो गयी तो मर्द सर मुंडवा कर या कतरवा कर और औरतें अपनी चोटी से एक अंगुल बाल काट कर नहा कर कपड़े पहन लें और तवाफ इफाजा के लिए हरम जाइये कि यह तवाफ फर्ज है, तवाफ कीजिए और उसके साथ सफा, मरवा की सई करके मिना वापस आइये, कुर्बानी न हो सकी हो तो एहराम ही में तवाफे इफाजा कर आइये, ज़िक्र व अजकार दुआ, और नमाज़ व जमाअत की पाबन्दी कीजिए, अपने भाइयों से मिलिए, दावत इलल्लाह का जाइज़ा लीजिए, खुद और दूसरों को इसके लिए कहिए।

11, ज़िलहिज्जा-

जुहर के बाद तीनों दीवारों (शयातीन) को सात सात कंकरियां पहले की तरह मारिये, पहले छोटे को फिर बीच वाले को, आखिर में बड़े को, पहले छोटे और बीच वाले शैतान को कंकरियां मारने के बाद दुआयें कीजिए, बड़े वाले को मार कर दुआ न कीजिए।

12, ज़िलहिज्जा-

जुहर के बाद तीनों शैतानों को कंकरियाँ मारने के बाद कियाम गाह आइये और सूरज डूबने से पहले मिना छोड़ दीजिए, जो कुछ बयान हुआ उसमें भूल-चूक पर फौरन किसी जानकार से मसला पूछिऐ और मक्के की कियाम गाह आइये, जब तक सुहूलत मिले मक्के में रहिए, हरम में नमाज़ पढ़िये और तवाफ का एहतिमाम कीजिए आखिर में तवाफे विदाअ़ करके मक्के से रवाना होइये, औरत अगर 10, जिलहिज्जा को माहवारी से नापाक हो जाये तो पाक होने पर तवाफे इफाजा करे लेकिन मर्द 12 की मगरिब से पहले तवाफे इफाजा ज़रूर कर लें।

मदीना तय्यबा पहले गये हों या बाद में जायें वहां की

मस्जिद में जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने का एहतिमाम कीजिए रौजये अक़दस पर हाजिर हो कर सलात व सलाम पेश कीजिए चंद दिन जो मुक़द्दर हों उस नूरानी फज़ा में गुजारिए, जब आना पड़े तो आंसू बहाते हुए चले आइये।

हज से मुतअ़ल्लिक़ बाज़ अल्फाज़ की शरह़ (हज से सम्बन्धित कुछ शब्दों की व्याख्या)-

एह़राम- हज या उम्रे के लिए मीक़ात या उससे पहले हज या उम्रे की नीयत करके तल्बिया पढ़ने को एहराम बाँधना कहते हैं। इसमें मर्द के लिए सिले कपड़े उतार कर दो चादरें पहनना ज़रूरी होता है, मगर औरतें अपने आम लिबास में होती हैं। उन दोनों चादरों को भी एहराम कहते हैं लेकिन हज का एहराम वही है जो बयान हुआ।

इस्तिलाम- हजरे असवद को चूम लेने या हाथ लगा कर हाथ को चूम लेने या दूर हों तो हज़रे असवद की तरफ हाथ से इशारा करके हाथ को चूम लेने को इस्तिलाम कहते हैं। अगर रुकने यमानी के पास से गुज़र हो और उसको आसानी से छू सकते हों तो उसका भी इस्तिलाम किया जाता है।

इज़्तिबाअ़- एहराम की हालत में मर्द जो चादर ऊपर ओढ़ते हैं उसका दायां हिस्सा दायें काँधे के नीचे से निकाल कर बायें कंधे पर डालने को इज्तिबाअ़ कहते हैं।

रम्ल- दोनों कन्धों को ज़रा हिलाते हुए क़रीब क़रीब क़दम रखते हुए कुछ अकड़ कर चलने को कहते हैं।

इफ़राद- सिर्फ हज की नीयत करके सिर्फ हज करने को इफराद हज कहते हैं, इफ़राद हज करने वाले को मुफर्रिद कहते हैं।

तमत्तुअ़- हज के महीनों (शव्वाल) ज़ीक़ादा और शुरु जिलहिज्जा में उम्रे का एहराम बाँध कर उम्रा करके हलाल हो जाना फिर आठ जिलहिज्जा को हज का एहराम बाँध कर हज करने को तमत्तुअ़ हज कहते हैं। तमत्तुअ़ हज करने वाले को मुतमत्तेअ़ कहते हैं।

क़िरान- मीक़ात पर या उससे पहले उम्रा और हज दोनों की नीयत एक साथ करके एहराम बाँध कर पहले उम्रा फिर उसी एहराम से हज करने को क़िरान हज कहते हैं, क़िरान हज करने वाले को क़ारिन कहते हैं।

तल्बिया- "लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैक लाशरीक लक लब्बैल, इन्नल हम्द वन्निअ़मत लक, वल मुल्क लाशरीक लक" इन कलिमात को लब्बैक कहते हैं।

हल्क़- सर मुंडाना

क़स्र- बाल कतरवाना

दम- एहराम की बाज़ गल्तियों पर एक बकरी ज़ब्ह करना होती है इसको दम देना कहते हैं।

सई- एक खास तरीक़े से सफ़ा और मरवा के बीच सात चक्कर लगाने को सई कहते हैं।

तवाफ- एक ख़ास तरीक़े से काबे के गिर्द सात चक्कर लगाने को तवाफ़ कहते हैं।

उम्रा- ह़िल या मीक़ात पर उम्रे का एहराम बाँध कर काबे का तवाफ करना और सफ़ा व मरवा के बीच सई करना उम्रा, करना कहलाता है।

वक़ूफ- मैदाने अरफ़ात और मुज्दल्फ़ा में एक ख़ास वक़्त में ठहरने को कहते हैं।

रमी- जमरात को ख़ास वक़्त में, खास तरीके पर कंकरियाँ मारने को रमी करना कहते हैं।

आफाकी- आफाकी वह है जो मीकात से बाहर रहता है जैसे हिन्दी, पाकिस्तानी या इराकी आदि।

बतने अरना- अरफात के करीब एक जंगल है यह अरफात से बाहर है नौ जिलहिज्जा को इसमें वकूफ करने से हज न होगा कुछ लोग न जानने के सबब इसमें वकूफ कर लेते हैं वह अगर अरफात में नौ जिलहिज्जा को दाखिल न होंगे तो उनका हज न होगा।

जमरात या जिमार- मक्का से पूरब मिना में तीन जगहें हैं वहां हाजी लोग 10,11,12 एवं 13 जिलहिज्जा को कंकरियाँ मारते हैं, कंकरियाँ मारने के लिए पहले तीन खम्भे थे और अब तीन दीवारें बना दी गई हैं यह दीवारें भी हाजियों की कसरत के सबब तीन मंजिला कर दी गई हैं उनमें जो सबसे पूरब मस्जिदे खैफ के पास है उसको जमरतुल ऊला (छोटा शैतान) कहते हैं फिर मक्के की तरफ थोड़ा चल के दूसरी दीवार है उसको जमरतुल वुस्ता (मंझला शैतान) कहते हैं और मक्के की तरफ थोड़ा और चल कर तीसरी दीवार है उसको जमरतुल अक्बा (बड़ा शैतान) कहते हैं उसको जमरतुल कुबरा या जमरतुल उखरा भी कहते हैं। यह तीनों दीवारें जमरात या जिमार कहलाती हैं।

जन्नतुल मुअ़ल्ला- मक्का मुकर्रमा का कब्रस्तान।

जबले रहमत- अरफात में एक पहाड़ है।

हजरे अस्वद- हजरे अस्वद काले पत्थर को कहते हैं। यह जन्नत से उतारा गया था, यह गड़ढेदार पत्थर काबे के पूरब दक्खिन कोने पर सीने की ऊँचाई पर लगा हुआ है इसके चारों तरफ चाँदी का हल्का (घेरा) है।

हरम- मक्का मुकर्रमा के चारों तरफ कुछ दूर तक की जमीन हरम कहलाती है उसकी हदों पर निशानात लगे हुए हैं उसमें शिकार खेलना मना है, उसमें ईमान न लाने वालों का दाखिला भी मना है।

हरमी- वह शख़्स जो हरम की हुदूद में रहता है, वह हरमी कहलाता है।

हिल- हरम की हुदूद (सीमाओं) के चारों तरफ मीक़ात तक का इलाक़ा (क्षेत्र) हिल कहलाता है इसलिए कि हरम के अन्दर जो जायज़ बातें हराम होती हैं वह हिल में हलाल हो जाती हैं।

हिल्ली- हिल की ज़मीन में रहने वाला हिल्ली कहलाता है।

हतीम- बैतुल्लाह (काबा) से उत्तर की तरफ उससे मिला हुआ सीने की ऊँचाई तक की दीवार से कुछ हिस्सा घिरा हुआ है उसको हतीम कहते हैं, उसके अन्दर पूरब से दाखिल होने और पश्चिम को निकलने का रास्ता भी है, हतीम काबे का हिस्सा है इसलिए तवाफ करते वक़्त उसके बाहर से तवाफ किया जाता है।

ज़ुल हुलैफ़ा- यह एक जगह का नाम है जो मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा की तरफ दस किलो मीटर पर है मदीना मुनव्वरा की तरफ से मक्का मुकर्रमा आने वालों के लिए मीक़ात है, उसको बिअरे अ़ली भी कहते हैं।

जाते इर्क- मक्का मुकर्रमा से इराक की तरफ तीन रोज सफर की दूरी (लगभग 78 किलो मीटर) पर एक गैर आबाद जगह है यह इराक की तरफ से मक्का मुकर्रमा आने वालों की मीकात है।

रुकने यमानी- बैतुल्लाह (काबे) के दक्खिनी पश्चिमी कोने को कहते हैं।

रुकने इराकी- बैतुल्लाह (काबे) का उत्तरी पूरबी कोना रुकने इराकी कहलाता है इसलिए कि इराक काबे से इसी रुख पर है।

रुकने शामी- बैतुल्लाह (काबे) का पश्चिमी उत्तरी कोना रुकने शामी कहलाता है इसलिए कि काबे से शाम इसी रुख़ पर है।

जम जम- बैतुल्लाह (काबे) के करीब पूरब की तरफ एक चशमा (स्रोत) है जो कुएं की शक्ल में था अब वह बोरिंग की शक्ल में अण्डर ग्राउण्ड करके ऊपर फर्श बना दिया गया है उससे पानी लेने का नज्म भी कर दिया गया है जो उस जगह से अलग है अल्लाह तआला ने जम जम को अपने नबी इस्माईल अलैहिस्सलाम और उनकी वालिदा के लिए जारी किया था।

सफा- बैतुल्लाह (काबे) के करीब पूरब दक्खिन रुख पर एक पहाड़ी है, वहीं से सई शुरु की जाती है।

मरवा- बैतुल्लाह (काबे) के करीब उत्तर पूरब रुख पर एक छोटी सी पहाड़ी है उसी पर सई खत्म होती है।

नोट- सफा और मरवा के बीच की दूरी लगभग 600 मीटर है, अब यह दोनों पहाड़ियां और बीच का फासला दो मंजिला है जिससे हाजियों को सई करने में बड़ी आसानी होती है।

अरफात या अरफा- मक्का मुकर्रमा से पूरब की तरफ लगभग 15 कि0मी0 पर एक बड़ा मैदान है अब नये रास्तों से लगभग 21 कि0मी0 का फासला है यहां हाजी लोग 9 जिलहिज्जा को ठहर कर हज का एक फर्ज अदा करते हैं।

कर्न- मक्का मुकर्रमा से पूरब की तरफ लगभग 42 मील (68 कि0मी0) पर एक पहाड़ है यह नज्द की तरफ से आने वालों की मीक़ात है। इसको कर्ने मनाजिल भी कहते है।

जुहफा- मक्का मुकर्रमा से शाम की जानिब तीन मंजिल (48 मील यानी 78 कि0मी0) पर राबिग के करीब एक जगह है यह शाम की तरफ से मक्का मुकर्रमा आने वालों की मीकात है।

मीक़ात- वह मकाम जहां से हाजियों के लिए मक्का मुकर्रमा जाने के लिए एहराम बाँधा जाता है यह मीक़ातें मक्का मुकर्रमा के चारों ओर मुक़र्रर है, इसमें संगे मरमर लगा दिया गया है।

मक़ामे इब्राहीम- यह एक पत्थर है जिस पर दो पौरों के गहरे निशान बने हुए हैं इसी पत्थर पर खड़े हो कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बैतुल्लाह की तामीर की थी कहते हैं यह पत्थर जन्नत से उतारा गया था, यह पत्थर बैतुल्लाह से पूरब थोड़े फासिले पर एक शीशे के कुण्डे में महफूज़ है।

मुलतज़म- हजरे अस्वद और काबे के दरवाज़े के बीच की

दीवार को कहते हैं। इससे लिपट कर दुआ मांगना सुन्नत है।

मिना- मक्का मुकर्रमा के पूरब पाँच कि0मी0 के फासिले पर एक बस्ती है, जहाँ कुर्बानी की जाती है। यह हरम में दाखिल है।

मस्जिदे ख़ैफ़- यह मिना की बड़ी मस्जिद है। जो मिना के उत्तरी इलाक़े में एक पहाड़ के क़रीब है।

मस्जिदे नमिरा- यह अरफात के किनारे पर एक बड़ी मस्जिद है।

मुज़दल्फा- मिना और अरफात के बीच एक मैदान है मिना से पूरब पाँच कि0मी0 के फासिले पर है।

मुहस्सर- मुज्दलफा से मिला हुआ एक मैदान है कहा जाता है कि अस्हाबे फ़ील पर यहीं अज़ाब नाज़िल हुआ था।

मीलैने अख़ज़रैन-सफा और मरवा के बीच सफा के करीब दो हरे पत्थर लगे हैं उन पर हरी बत्तियां जल्ती रहती हैं उनके बीच सई करने वाले मर्द दौड़ कर चलते हैं।

मक्की- मक्का मुकर्रमा का रहने वाला।

मौक़िफ़- ठहरने की जगह मगर हज में इससे मुराद अरफात और मुजदल्फा में ठहरने (वकूफ करने) की जगह को कहते हैं।

यौमे अरफा- नवीं जिलहिज्जा को कहते हैं, इस रोज़ सारे हाजियों के लिए अरफात के मैदान जाना फर्ज़ है, यौमे अरफा को अरफात के मैदान जाये बिना हज नहीं हो सकता।

यौमे तरविया- आठवीं जिलहिज्जा को कहते हैं, इस रोज़ हाजी लोग एहराम बाँध कर मिना जाते हैं।

यलमलम- यह जद्दे से दक्खिन की तरफ लगभग 100 कि0 मी0 की दूरी पर एक पहाड़ी है इसको सादिया भी कहते हैं। यह मकाम यमन की तरफ़ से आने वालों की मीक़ात है, पानी के जहाज़ से आने में यह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के लोगों के लिए मीक़ात थी मगर हवाई सफर से पाकिस्तान, हिन्दुस्तान और बंगलादेश के लोग उस तरफ से नहीं गुजरते, इसलिए इधर के लोगों को अपने हवाई अड्डे पर एहराम बाँधना चाहिए, अगर अपने हवाई अड्डे पर एहराम न बाँध सकें तो हवाई जहाज़ में जद्दा से आधा घंटा पहले एहराम बाँधना बहुत ज़रूरी है। हवाई जहाज़ में इसका एलान हो जाता है।

❖❖❖

इख़्लास और.....

लोग मुझसे मुसाफहा करेंगे, मेरी चर्चा करेंगे, मुझे अच्छा समझेंगे, जियादा पैसा देंगे, यह चीज़ें वह हैं जो अमल को बिल्कुल बर्बाद कर देती हैं, जैसे दूध में लेमूं डाल दें या झूठे बर्तन में आप दूध लें तो क्या होगा? आप समझ सकते हैं, दूध फट जायेगा, ऐसे ही नमाज़, रोज़ा, पैसे खर्च करना, दूसरों के काम आना, सब खराब हो जाते हैं नीयत के खराब होने से, हाँ अंदर का मुआमला है, और अंदर का हाल सिर्फ अल्लाह ही जानते हैं, इसी लिए अल्लाह ने फरमाया कि आखिरत में खुलेगा कि कौन अच्छा है और कौन खराब है।

❖❖❖

तबलीगे नबवी सल्ल0 उसके उसूल और उसकी कामयाबी के असबाब

(हुजूर सल्ल0 के धर्म प्रसारण के नियम और उनकी सफलता के कारण)

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी

—अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0

तबलीग के नियम—

यह रहस्य की किस प्रकार लोगों को किसी सच्चाई के कबूल करने की दावत देनी चाहिए, दुन्या में पहली बार हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की जबाने मुबारक से अदा हुआ, वह मजहब भी जो तबलीगी होने का दावा रखते हैं, यह नहीं कह सकते कि उनके आसमानी किताबों ने उनके लिए धर्म प्रसारण के अहम नियमों की व्याख्या की है, लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर उतरने वाले सहीफे (कुर्आन मजीद) ने बहुत ही संक्षेप लेकिन पूर्ण व्याख्या के साथ अपने मानने वालों को यह बताया है कि पैगामे इलाही को किस प्रकार लोगों तक पहुँचाया जाये, और उनको कबूले हक की दावत किस प्रकार दी जाये, अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं अनुवादः लोगों को अपने रब की राह की ओर दानाई, अकल्मंदी और उम्दा नसीहत के जरिये बुलाइये, और उनसे मुनाजरा अच्छे तरीके से कीजिए।

(सू—रए—नहल 16:125)

हक़ीकत यह है कि जब हम किसी के सामने कोई नई बात पेश करके उसके कबूल की दावत देते हैं तो आम तौर से तीन तरीके अपनाते हैं या तो अपनी बात के सुबूत और ताईद में कुछ दिल को मोह लेने वाली दलीलें पेश करते हैं, या उसको मुखलिसाना नसीहत करते हैं और प्रभावी अंदाज से उसको भलाई बुराई और उतार चढ़ाव से अवगत कराते हैं या उसकी दलीलों को मुनासिब ढंग से रद कर के उसकी गलती को उस पर वाजेह करते हैं, पहले तारीके का नाम हिकमत, दूसरे का नाम मौइजये हसना, और तीसरे का नाम अच्छे ढंग से मुनाजरा व मुकाबला है, तबलीग व दावत के यही तीन तरीके है।

नर्म बात—

हकीमाना इस्तिदलाल हो या वाजो नसीहत हो या मुनाजरा व मुजादला हो, जरूरत यह है कि दाओ नर्मी और खैरख्वाही से बातें करे कि सख्ती और शिद्दत का तरीक़ा दूसरे के दिल में नफरत और दुश्मनी के जज़बात पैदा करता है और कैसी ही अच्छी और सच्ची बात हो लेकिन इस प्रकार के जज़बात उसके कबूल की सलाहीयत उससे छीन लेते हैं और सुनने वाले में अपनी गलती पर ज़िद और हटधर्मी पैदा कर देते हैं, जिससे दावत का फाइदा और नसीहत का असर बातिल (खत्म) हो जाता है इसी लिए कुर्आन पाक में अपने पैगम्बरों को अपने बड़े से बड़े दुशमनों से भी नर्मी ही से बातें करने की ताकीद की गई है, हजरत मूसा व हजरत हारून अलै0 को फिरऔन जैसे नाफरमान के सामने खुदाई पैगाम लेकर जाने की हिदायत होती है तो साथ ही यह भी इरशाद होता है, अनुवादः तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ, उसने सरकशी (नाफरमानी)

की है और उससे नर्म बात करना, शायद वह नसीहत कबूल करे या अल्लाह से डरे।

(सूर–ए–ताहाः 20/43,44)

दावत व तबलीग में आसानी और नर्मी और महब्बतो बर्दाश्त की तालीम की उससे अच्छी मिसाल नहीं हो सकती है कि न कोई दाई और नसीहत करने वाला पैगंबरों से बेहतर हो सकता है और न फिरऔन से बढ़ कर कोई मुज्रिम हो सकता है, फिर ऐसे मुज़रिम के सामने इस उल्फत व नर्मी से वअ़ज व नसीहत की तालीम जब पैग़म्बरों को होती है तो आम दाईयों, धर्म प्रचारकों, और दूसरे दीन का काम करने वालों को, अपने बड़े से बड़े मुखालिफीन (विरोधियों) मुजरिमों, और नाफरमानों के साथ तो और जियादा नर्मी और महब्बत से अपने इस कर्तव्य को अदा करना चाहिए।

एराज (विमुखता) और असर करने वाली बात–

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उन मुनाफिकों के बारे में जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नाफरमानी के जुर्म के करने वाले थे यह आदेश होता है। अनुवादः तो आप उनसे दरगुजर का मुआमला कीजिए और उनको नसीहत कीजिए और उनसे ऐसी बात कहिए जो उनके दिलों में असर करे।

(सूर–ए–निसा 4/63)

इस तालीम में तीन हिदायतें हैं–

(1) दावतो तबलीग (धर्म प्रचार व प्रसार) में विरोधियों की बद तमीजियों, दुर्व्यवहारों, सख़्तियों को माफ और बर्दाश्त करना चाहिए (2) उनको नसीहत करना और समझाना चाहिए (3) बात की वह प्रभावी व असर करने वाली शैली इख़्तियार करना चाहिए जो दिल में बैठ जाये। ❑❑

आज़िमीने हज.....

नहीं की है तो तवाफ़े ज़ियारत के बाद हज की सई करना होगी। हज्जे क़िरान में मीक़ात पर या मीक़ात से पहले उम्रा और हज दोनों की नीयत एक साथ करके एहराम बाँधा जाता है फिर मक्का मुकर्रमा पहुंच कर क़िरान हज करने वाले को पहले उम्रा करना होता है लेकिन सई के बाद न बाल काट सकता है न मुंडा सकता है इसलिए कि वह अभी एहराम में है।

सई के बाद उसके लिए तवाफ़े कुदूम सुन्नत है इसको भी इख़्तियार है कि वह तवाफ़े कुदूम के बाद हज की सई करले अगर वह तवाफ़े कुदूम के बाद हज की सई करेगा तो तवाफ़े कुदूम में मर्द को रम्ल और इज्तिबाअ़ भी करना होगा इस सूरत में तवाफ़े जियारत के बाद हज की सई न करना होगी लेकिन अगर तवाफ़े कुदूम के बाद हज की सई करने का इरादा नहीं है तो तवाफ़े कुदूम में मर्द न रम्ल करे न इज्तिबाअ़ बाक़ी अहकाम इसी अंक के "मक्का मुकर्ररमा में हाजियों के पाँच दिन" में देंखें।

याद रहे कि इफ़राद या किरान हज करने वाले भी तवाफ और सई में तल्बिया न पढ़ें मगर सई के बाद तल्बिया पढ़ते रहेंगे, उनकी तल्बिया भी 10 जिलहिज्जा को जमरतुल अ़क़्बा (बड़े शैतान) को कंकरी मारने से पहले ख़त्म होगी। ❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एक शख़्स के वालिद पर हज फर्ज था लेकिन वह ग़फ़लत की वजह से हज अदा नहीं कर सके और दुन्या से चल बसे, इन्होंने कोई वसीयत भी नहीं की है और वफ़ात से क़ब्ल काफ़ी मक़रूज़ भी हो गये थे, क्या उन पर हज फर्ज है, क्या उनकी तरफ़ से हज्जे बदल कराना ज़रूरी है?

उत्तरः जब हज फ़र्ज हो गया था और ग़फ़लत की वजह से हज नहीं किया तो उन पर हज रह गया लेकिन जब उन्होंने उसकी वसीयत नहीं की है, तो उनकी तरफ़ से हज्जे बदल कराना ज़रूरी नहीं, हां अगर वारिस हज्जे बदल करा दें तो मरहूम के जिम्मे से फ़र्ज साक़ित हो जाएगा।

(गुन्यतुन्नासिक—173)

प्रश्नः एक शख़्स के वालिद पर हज फर्ज़ था लेकिन उन्होंने अदा नहीं किया और न ही वसीयत की लेकिन उनके लड़के मालदार हैं और उन पर खुद हज फर्ज है, और वह चाहते हैं कि वालिद मरहूम की तरफ़ से हज करें, सवाल यह है कि पहले वालिद मरहूम की तरफ़ से हज्जे बदल करें या अपना हज फर्ज अदा करें?

उत्तरः जब मरहूम ने वसीयत नहीं की है तो उनकी तरफ से औलाद पर हज फ़र्ज नहीं है, इसलिए पहले अपना हज फ़र्ज अदा करें फिर वुसअत हो तो वालिद मरहूम की तरफ़ से हज्जे बदल करें।

(तातार खानिया—2/564)

प्रश्नः हज्जे बदल में लब्बैक पढ़ते वक्त उनका नाम भी लब्बैक में लेना ज़रूरी है?

उत्तरः तल्बिया यानी लब्बैक कहते वक़्त जिनकी तरफ़ से हज्ज किया जा रहा है उनका नाम लेना ज़रूरी नहीं बल्कि दिल में यह नीयत कर लेना काफ़ी है कि फलां शख़्स की तरफ से यह एहराम बाँधता हूं लेकिन अगर एहराम के वक़्त उनकी तरफ़ से एहराम की नीयत नहीं की और आमाले हज्ज शुरु कर दिये तो हज्जे बदल सही नहीं होगा, इसलिए तल्बिया के साथ नाम लेना अफ़ज़ल है वरना नीयत काफ़ी है।

(गुन्यतुन्नासिक—174)

प्रश्नः क्या हज्जे बदल करने वालों के लिए हज्जे तमत्तो करना दुरुस्त नहीं है?

उत्तरः बाज़ उलमा ने हज्जे बदल में तमत्तो को जाइज़ क़रार दिया है लेकिन फुक़ाहा के यहां जो सराहत मिलती है, इसमें राजेह यही है कि हज्जे बदल में तमत्तो न किया जाए।

(रद्दुल मुहतार—4/17)

प्रश्नः हज्जे बदल के बाद इख़राजाते हज में से अगर रक़म बच जाये, तो क्या वह रक़म हज कराने वाले को वापस कर देना ज़रूरी है या हज करने वाला खुद रख सकता है?

उत्तरः अगर हज कराने वाले ने इख़राजात से ज़ाइद रक़म दी है और वह बच रही है तो इसकी वापसी ज़रूरी है, हाँ अगर हज कराने वाले ने यह

शेष पृष्ठ .....38....पर

एक हो उम्मत नबी की

—इदारा

या इलाही शुक्र तेरा, तेरी हैं लाखों निअ़म
हाले उम्मत देख कर लेकिन मेरी आँखें हैं नम
एक ख़ालिक़ एक कुरआँ एक है सब का रसूल
हम सभी हैं दीनी भाई, क्यों गये रिश्ता ये भूल
जो पढ़े कलमा नबी का, दिल से उसको मान ले
और ईमाने मुफस्सल की भी बातें मान ले
वह नबी का उम्मती है और भाई आप का
आप उसके मुहतरम हैं, मुहतरम वह आप का
एक हो उम्मत नबी की, फ़िर्कों में वह न बंटे
इख़्तिलाफे फ़हम में भी रिश्ता उम्मत का रहे
हुब्बे रब, हुब्बे नबी उम्मत की यह पहचान हो
और नबीये पाक की, हर बात पर, ईमान हो
सब नबी के उम्मती हैं, फहम का है इख़्तिलाफ़
फ़हम में गर चूक है, कर देगा रब उसको मुआफ़
मुजतहिद ख़ाती भी पाएगा ख़ुदा से इक़ सवाब
और साइब मुजतहिद, दो चन्द पाएगा सवाब
रहमतें या रब नबी पर और हों लाखों सलाम
उनके सब असहाब पर भी रहमतें उतरें मुदाम

कठिन शब्दों का अर्थ-

उम्मत- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयाई। **निअ़म**- वरदान, **नम**- भीगी, **नबी का कल्मा**- ज़बान से कह कर यह मानना कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नही है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं। (ला इलाह इल्लल्लाहु, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि), **ईमाने मुफ़स्सल**- अल्लाह को उसके उत्तम गुणों तथा नामों के साथ मानना, उसके फरिश्तों, किताबों और रसूलों को मानना, क़ियामत के दिन को मानना और तक़दीर इस तौर पर मानना कि अच्छी हो या बुरी जो हो अल्लाह की तरफ़ से है। **मुहतरम**- सम्मानित, **फिर्क़ों**- गुटों, **इख़्तिलाफे फ़हम**- मतभेद, **हुब्ब**- प्रेम, **ईमान**- विश्वास, **मुज़तहिद**- वह बड़ा विद्वान जो कुर्आन और हदीस को समझ कर उनसे आदेश निकाले, **ख़ाती**- चूक जाने वाला, **साईब**- सत्य पा लेने वाला, **दो चन्द**- दो गुना, **मुदाम**- सदैव। ❑❑

स्वतंत्रता दिवस

—इदारा

मुग़ल काल में समन्दर पार से गोरे (अंग्रेज़) अपनी जीविका ढूँढने भारत आए और मुग़ल शासन से भारत में व्यापार की अनुमति मिल गई, यहाँ की जनसंख्या उस समय बहुत कम थी, और जीवन सामग्री की बहुतात, अनाज इतना कि खाए न चुके, दूध, दही, घी इतना की खाए न खपे, फल फूल इतना कि जानवर भी खाएं, बहती नदियां, घने वन, फलों के बाग़ हरे भरे मैदान, सब खुश, सब प्रसन्न, किसी को जीविका कमाने के नये साधन की कोई आवश्यकता नहीं, कोई खेती में मस्त, तो कोई पशुपालन में खुश, तो कोई आवश्यक व्यापार में मगन तो कोई राजपाट में व्यस्त, ऐसे में अंग्रेजों को व्यापार की अनुमत मिली तो किसी को कोई आपत्ति न हुई अपितु सब प्रसन्न हुए।

अंग्रेज़ों का व्यापार ऐसा चमका कि देखते ही देखते वह यहां के राजाओं के टक्कर के हो गये, उन्होंने शासन की अनुमति से अपनी सैनिक शक्ति भी बनानी और बढ़ानी आरम्भ कर दी, शासन ने यह सोचा कि इसका व्यय इन पर होगा और चूंकि वह हमारे अधीन हैं इसलिए आवश्यकता पड़ने पर इन से सहयोग भी मिलेगा। परन्तु शासन इनकी चालों को समझ न सका और एक दिन वह आया कि मुग़ल शासन का पतन हुआ तथा ईस्ट इण्डिया कम्पनी जो अंग्रेज़ों की व्यापारिक कम्पनी थी भारत की शासक बन बैठी।

अब भारत वासियों को महसूस हुआ कि मुगल शासन ने इनसे धोखा खाया मगर अब क्या हो सकता था, हाथ से चिड़िया उड़ चुकी थी, इस अंग्रेज़ी कम्पनी ने भारतीय नागरिकों के साथ अपने गोरों के मुकाबले आरम्भ किया वह अपमान जनक और दुखदायक था, कम्पनी ने अपनी सैनिक शक्ति बहुत बढ़ा ली थी उसकी सेना में अंग्रेजों की भी बड़ी संख्या थी साथ में हिन्दुस्तानी सिपाही भी थे।

भारत वासियों के मनों में अंग्रेजों के विरुद्ध लावा पक रहा था, फिर 1857 ई0 में यह फट पड़ा, भारत वासियों ने बल द्वारा अंग्रेज़ों को भारत से निकाल देना चाहा और बहुत हद तक वह सफल भी हुए परन्तु, अंग्रेजों का मुकाबला न कर पाए। यह बहुत बड़ा क्रांति कारी विद्रोह था, परन्तु असफ़ल रहा, यद्यपि इस विद्रोह में अंग्रजों की एक संख्या मारी गई परन्तु भारत वासियों का जानी व माली बड़ा नुक्सान हुआ, और अधिकांश मुसलमानों का नुक्सान हुआ, लगभग एक लाख भारत वासी मारे गये कितनों के घर खुदवा दिये गये सम्पत्तियां ले ली गईं कितनों को काला पानी भेजा गया, और बड़े ही दुख की यह बात हुई कि मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के जवान बेटों और पोतों को क़त्ल करके उनके सिर बहादुर शाह जफर को प्रस्तुत किये गये, फिर उनको दिल्ली से रंगून भेज दिया गया और वहीं उनका देहांत

हुआ, इसी को बहादुर शाह जफर ने एक पद्य में कहा था– "है कितना बद नसीब ज़फ़र दफ़्न के लिए। दो गज़ ज़मीं भी मिल न सकी कूए यार में"।

कुछ समय पश्चात जब कुछ शक्ति हुई और ब्रिटिश शासन ने भारत का शासन कम्पनी से अपने हाथ में ले लिया तो यहां के नेताओं ने तय किया कि इन अंग्रेजों को यहां से निकालना तो आवश्यक है परन्तु इनको बल से लड़ कर निकालना असम्भव है और अब उन्होंने प्लान बनाया कि इनको अक़्ली तौर पर (बुद्धि द्वारा) क़ाइल किया जाए कि किसी दूसरे देश पर वहां की जनता को नाख़ुश करके वहां शासन करना अवैद्य है, उस समय यह रुजहान विश्व व्यापी हो चला था। परन्तु जिन शासकों को शासन का लाभ मिल रहा था वह इस उचित बात को मानने को तैयार न थे और यहां के नेताओं को उल्टा सीधा उत्तर देकर चुप कर देने की चेष्टा करते रहे।

यहां के नेताओं ने निर्णय लिया कि बल के प्रयोग से हानि अधिक होगी तथा सफ़लता सन्देह में रहेगी, उन्होंने सत्या ग्रह का रास्ता अपनाया इसमें उनको डण्डे खाने पड़े, जेल जाना पड़ा परन्तु यह आन्दोलन जारी रहा। इस महत्वपूर्ण तथा आवश्यक आन्दोलन में भाग लेने वाले कुछ वरिष्ट नेताओं के नाम इस प्रकार हैं–

महात्मा गाँधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल, गुलजारी लाल नन्दा, लाल बहादुर शास्त्री, मौलाना कुहम्मद अली जौहर, मौलाना हसरत मोहानी, दौलत हुसैन, अहमद मदनी, मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान सिवहारवी, हाफिज मुरसिद, इब्राहीम, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद जैसे हिन्दू मुस्लिम नेताओं की एक बड़ी संख्या है। जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए अपने जानो माल की कुर्बानी दी।

इन महापुरुषों ने निरंतर और अथक प्रयास किया, कष्ट पर कष्ट सहे परन्तु अपने लक्ष्य पर जमे रहे, अन्ततः ब्रिटिश साम्राज्य को झुकना पड़ा और मानना पड़ा कि भारत वासियों की मांगें वैद्य हैं और निर्णय हुआ कि भारत को स्वतंत्रता दी जाए। परन्तु अंग्रेजों के जाते जाते एक बात यह हुई कि विशाल भारत (हिन्दुस्तान) का विभाजन हो गया, पाकिस्तान और भारत, फिर पाकिस्तान के भी दो भाग हुए, पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान, इस फैसले के बाद पाकिस्तान ने हम से एक दिन पहले 14 अगस्त 1947 को आज़ादी का जश्न मनाया जब कि भारत ने 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता दिवस मनाया।

निःसंदेह 15 अगस्त 1947 भारत के लिए स्वर्ण दिवस था कि लगभग 200 वर्षों पश्चात गोरों के अत्याचार से भारत को छुटकारा मिला था, पूरे देश में धूम धाम से आज़ादी का जश्न मनाया गया, इस आज़ादी के पश्चात एक बड़े दुख की बात तो यह हुई कि, बहुत से भारतीय मुसलमानों ने पाकिस्तान को पलायन किया और बहुत से हिन्दू और सिख पाकिस्तान

से भारत की ओर चल पड़े, इस प्रक्रिया में जो कुछ घटा उसको पत्रकारों ने कियामते सुगरा (लघु प्रलय) का नाम दिया जो भी हो सब पीछे चला, फिर थोड़े दिनों पश्चात अर्थात 16 माह भी न बीते थे कि 30 जनवरी 1948 को महात्मा गाँधी जिनको राष्ट्रपिता की उपाधि दी गयी थी एक निर्दयी अत्याचारी (नाथोराम) ने उनकी हत्या कर दी। यह कष्ट भी सह लिया गया अब अपना देश, स्वतंत्र था, देश के महापुरुषों, विद्वानों तथा बुद्धि जीवियों ने देश के विकास में अथक प्रयास किया और आज देश जिस स्थान पर है वह स्वतंत्रता से पहले के मुक़ाबले में कुछ और ही है, अभी अंग्रेज़ के दौर का यह हाल देखने वाले वरिष्ट नागरिकों की एक संख्या सिंघासन है जो हमारे कथन प्रमाणित करेगी, स्वतंत्रता मिले 67 वर्ष हो चुके हैं, यद्यपि इस लम्बे काल में भारत में ऐसी घटनाएं घटीं ऐसे कष्ट दायक विद्रोह हुए जिससे देश के अल्पसंख्यकों को बड़ा कष्ट हुआ और जैसे उनकी स्वतंत्रता छिन गई इसके बावजूद वह देश की उन्नति में देश को आगे बढ़ाने में सहयोगी ही नहीं आगे आगे हैं, अल्लाह उनकी मदद करेगा इसके विस्तार का यह मौक़ा नहीं।

यह स्वतंत्रता दिवस का संक्षेप में परिचय हुआ 15 अगस्त सन् 1947 ई0 में देश स्वतंत्र हुआ, हमारा देश उस स्वतंत्रता दिवस की याद और खुशी में हर वर्ष 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाता है, उस दिन तिरंगा झण्डा फहराया जाता है, राष्ट्रगान गाया जाता है, मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं, विभिन्न प्रकार के प्रोग्राम होते हैं स्वतंत्रता सैनानियों को याद किया जाता है। अल्लाह तआला हमारे देश की समृद्धि तथा प्रसन्नता बाक़ी रखे आमीन।

❖❖❖

पाठक "सच्चा राही" के ख़रीदार बना कर सहयोग दें।

भारत प्यारा ज़िन्दाबाद

दिवस स्वतंत्रता आओ मनाएं
गीत प्रेम के मिल कर गाएं
ले के तिरंगा हम लहराएं
देश तिलंगा सब को बनाएं
देश हमारा ज़िन्दा बाद
भारत प्यारा ज़िन्दा बाद
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
आपस में सब भाई भाई
आओ गाएं रब की बड़ाई
कभी न हों यां धर्म लड़ाई
भारत प्यारा ज़िन्दा बाद
देश हमारा ज़िन्दा बाद
हर कोई यां शिक्षित होगा
शान्ति ज्ञान का पंडित होगा
पाप यहां पर खण्डित होगा
अत्याचारी दण्डित होगा
भारत प्यारा ज़िन्दा बाद
देश हमारा ज़िन्दा बाद
भ्रष्टाचार मिटाएं हम सब
आतंकवाद मिटाएं हम सब
छूत छात मिटाएं हम सब
भेद भाव मिटाएं हम सब
भारत प्यारा ज़िन्दा बाद
देश हमारा ज़िन्दा बाद
मेहनत करना सबको सिखाएं
जन सेवा का पाठ पढ़ाएं
सत्य ज्ञान को खूब बढ़ाएं
सत्य मार्ग हम सब को दिखाएं
भारत प्यारा ज़िन्दा बाद
देश हमारा ज़िन्दा बाद

जून के अंक से आगे.....

इस्लाम में विवाह

—इदारा

हमारे यहां के कानून में भी यह झोल है कि लड़का बालिग़ हो जाए अर्थात कानूनी आयु 18 वर्ष का हो जाए तो शादी कर सकता है। इस्लाम ने तो नाकेह़ (जो निकाह करे अर्थात जिस मर्द का निक़ाह हो) पर पत्नी का रोटी कपड़ा (नान व नफ़्क़ा) अनिवार्य किया है। अतः चाहिए कि जब लड़का बालिग़ भी हो जाए और अपनी बीवी का खर्च भी उठा सके तब शादी हो।

हमारे समाज में यह प्रथा भी बड़ी ख़राब चल पड़ी है कि बाप अपने बेटे की बीवी फिर उसके बच्चों के खाने, कपड़े और घर का ज़िम्मेदार होता है। यह सत्य है कि हमारे यहां अधिक लोग किसान हैं या व्यापारी या उद्योगी जिसमें घर के सभी लोग रहते हैं, आय सम्मिलित होती है, नौकरी या मजदूरी करके निजी आय करने वाले कम हैं। सम्मिलित आय में बाप या घर का बड़ा आय का मालिक रहता है। ऐसे में चाहिए कि जो लड़का बालिग़ हो जाए घर मालिक आय के अनुसार उस का वेतन नियुक्त कर दे ताकि वह शादी करे तो अपनी पत्नी का खर्च संभाल सके, बड़ी समस्या दीहात के किसानों की होती है, खेत में जो अनाज पैदा होता है इकटठा रखा जाता है उसी में से पूरे घर का खाना पकता और खाया जाता है। एक किसान इसको बड़ा ऐब मानता है कि बहू आए तो वह अलग हो जाए और उसका खर्च उसका पति संभाले हालांकि यह ऐब की बात न थी, फिर भी इस मुशतरक ख़ान्दान (सम्मिलित कुल) में कोई बहू खुश नहीं देखी गई सिवाए इसके कि वह उस खान्दान में अकेली हो फिर भी दीहात के किसानों में यह प्रथा चली आ रही है। परन्तु चाहिए यही कि जब लड़का बालिग़ हो जाए (इस्लामी शरीअ़त में बुलूग की आयु 15 वर्ष है) और वह कमाने लगे या वह इतने धन आय का मालिक हो कि अपनी पत्नी के रोटी कपड़े का खर्च उठा सके तथा उसके रहने के कमरे या घर का प्रबन्ध कर सके तब ही वह शादी करे। अगर माँ—बाप धनवान हों और अपने बेटे और उसकी पत्नी का खर्च उठा सकें तो इसमें कोई बाधा नहीं कि वह ऐसा करें परन्तु बहू का ऊपरी खर्च बेटे द्वारा उपलब्ध कराएं कि इसमें बेटे का भी सम्मान है तथा बहू का भी।

कुछ लोग कहते हैं कि इस आधुनिक युग में जो लड़के लड़की प्रेम विवाह (Love Marriage) करते हैं यह इस्लाम के अनुकूल है वह बड़ी भूल में हैं, इस्लाम में निकाह से पहले भेंट वाला प्रेम दण्डनीय है। अलबत्ता ऐसे दो प्रेमी जिन में निकाह वर्जित न हो बिना देर किये उन का निकाह हो जाना चाहिए।

दिन रखना- पस चाहिए कि जब लड़का लड़की बालिग़ हो जाएं और लड़का अपनी पत्नी का भार संभाल सके तो किसी शिष्ट लड़की को

उसके अभिभावक द्वारा पैगाम दे। लड़की की शिष्टता या उसका रंग रूप अपनी माँ बहन आदि द्वारा ज्ञात करे, लड़की वाले भी लड़के की शिष्टता तथा उसकी कमाई के विषय में पता लगा कर सन्तुष्ट हो लें जब दोनों ओर के लोग सहमत (मुत्तफिक़) हो जाएं तो परस्पर मिलकर निकाह की तिथि, दिन, समय स्थान का निर्धारण करें। (निकाह होते ही रुखसती हो रही हो तो निकाह की तारीख़ नियुक्त करने में लड़की की मां उसकी किसी करीबी स्त्री से परामर्श अवश्य लें ताकि वह लड़की की मासिक स्वक्षता काल जान कर मशवरा दें) इतने से काम के लिए सम्बन्धियों तथा मित्रों की भीड़ एकत्र करना और भोज का प्रबन्ध करना तथा लेन–देन करना सहज इस्लामिक सभ्यता को कठिन बनाना तथा इस्लामिक समाज को दूषित बनाना है जो बड़ा पाप है।

निकाह-निर्धारित समय पर कुछ दोस्त, अहबाब, सम्बन्धियों पड़ोसियों को बुला लें, लड़की पर्दे में रहे, उसका अभिभावक या उसका वकील लड़की को लड़के का परिचय देकर तथा महर बता कर निकाह कर देने की अनुमति मांगे, एक प्रकार से यह भी बड़ा विकार है चाहिए कि लड़की का अभिभावक परस्पर सहमत के पश्चात ही लड़की से लिखित अथवा मौखिक अनुमति ले ले। लड़की पढ़ी है तो उसको लिख कर सूचित करें कि तुम्हारा निकाह फुलां पुत्र फुलां से इतने महर पर किया जा रहा है तुम अनुमति के हस्ताक्षर कर दो यह बड़े ऐब की बात है कि कुछ ना महरम मर्द औरतों के बीच घेरे में बैठी लड़की से अनुमत लेने जाते हैं। बहर हाल अनुमति निकाह के समय नहीं पहले ही से अभिभावक (वली) द्वारा उचित है। लड़की की अनुमति बिना निकाह नहीं हो सकता।

अच्छा तो यही है कि स्वयं वली, नाकेह (दूल्हा) तथा दूसरे लोगों के सामने निकाह का खुत्बा पढ़े, फिर सब के सामने ईजाब व कबूल इस प्रकार कराएं।

मैं फुलां (लड़की का नाम पिता के साथ ले) जिसका मैं शरअ़ी वली हूं को इतने (महर बताए) महर पर तुम्हारे निकाह में दिया, क्या तुमने क़बूल किया? (यह ईजाब हुआ) नाकेह (दूल्हा) कहे क़बूल किया? (यह क़बूल हुआ) बस निकाह हो गया। मुस्तहब है कि बरकत की दुआ की जाए अगर वली ईजाब व कबूल कराने की योग्यता (सलाहीयत) नहीं रखता या किसी आलिम बुजुर्ग से ईजाब व क़बूल करवाना चाहता है तो उसे वकील बना दे। ईजाब व क़बूल के वक्त चन्द मुसलमानों का मौजूद होना सुन्नत है और कम से कम दो आक़िल बालिग़ मुसलमान मर्द या एक आक़िल बालिग़ मुसलमान मर्द और दो आकिल बालिग मुसलमान औरतों का बतौरे गवाह मौजूद होना फ़र्ज़ है।

हनफ़ी उलमा के निकट बालिग़ औरत की इजाज़त से निक़ाह पढ़ दिया जाए तो निकाह हो जाएगा (हमारे देश में कुछ को छोड़ कर सब हनफी हैं) परन्तु दूसरे आलिमों के निकट एक हदीस के आधार पर वली की अनुमति के बिना निकाह नहीं

हो सकता अतः वली की अनुमति ज़रूर ली जाए और वली स्वयं लड़की को सूचित करके अनुमति ले ले। ताकि सभी उलमा के निकट निकाह सही हो। बालिग़ लड़की यदि नकार दे तो केवल वली की अनुमति से निकाह नहीं हो सकता। यहां यह बात याद रहे कि बालिग़ लड़की और उसके वली की अनुमति अनिवार्य है (और हम हनफियों के नज़दीक बालिग लड़की के वली की अनुमति अनिवार्य नहीं मुस्तहब है) परन्तु बालिग़ लड़के के माँ–बाप की अनुमति की आवश्यकता नहीं, अलबत्ता यह बात अच्छी है कि बालिग़ लड़का अपने माँ–बाप की मर्जी का ख़्याल रखे।

महर दोनों प्रकार का वैध है चाहे तुरन्त देय हो अथवा उधार हो। तुरन्त देय वाला महर पत्नी की भेंट से पूर्व या भेंट पर अदा होना अनिवार्य है सिवा इसके कि पत्नी मोहलत दे दे। बिना महर के निकाह नहीं होता खूब याद रखें। परन्तु महर उतना ही होना चाहिए जिसे पति अदा कर सके। यह जो प्रसिद्ध है कि महर तलाक़ के समय दिया जाता है यह बिल्कुल ग़लत है महर पत्नी का हक़ है, अदा नहीं हुआ तो पति पर क़र्ज़ रहा, तलाक़ के समय तक अदा नहीं हुआ तो तलाक़ हो जाने पर इसकी अदायगी अनिवार्य हुई वरना यह क़र्ज़ कियामत में अदा करना होगा।

रुख़सती के दूसरे या तीसरे दिन वलीमा सुन्नत है। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ बड़े धनवान सहाबी गुज़रे हैं उन्होंने निकाह किया तो हूज़ूर सल्ल0 से न निकाह पढ़वाया ना ही आपको सूचित किया परन्तु जब आपको पता चला कि अबदुर्रहमान ने निकाह कर लिया है तो यह नहीं फ़रमाया कि मुझे क्यों नहीं बताया अलबत्ता यह कहा कि वलीमा करो चाहे एक बकरी ज़ब्ह करके ही क्यों न हो।

संक्षेपतः जब बालिग़ लड़का और बालिग़ लड़की, अपने माता पिता, बहन भाई अथवा किसी निकटस्थ्य सम्बन्धी द्वारा एक दूसरे को पसन्द कर लें, तो करीबी सम्बन्धी कुछ लोगों की एक मजलिस बुला लें जैसा कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी लाडली बेटी हज़रत फ़ातिमा के निकाह में किया था, लड़की का वली पहले ही से लड़की की रज़ा मन्दी जान रखे, फिर वह स्वयं निकाह पढ़ा सकता है तो खुद पढ़ाए वरना किसी को अनुमति देकर अपना वकील बना दे। निकाह पढ़ाने वाला मुसलमानों की मजलिस में मसनून खुत्बा पढ़े, फिर उसी मजलिस में लड़के को सम्बोधित करके कहे कि फुलां पुत्री फुलां को मैंने इतने महर पर तुम्हारे निकाह में दिया, क्या तुमने कबूल किया? लड़का कहे मैंने कबूल किया, बस निकाह हो गया, बरकत की दुआ करें लड़की रुख़्सत कर दें। लड़का अपनी पत्नी से सहवास के पश्चात अपनी सरतलतानुसार दूसरे या तीसरे दिन वलीमा कर दे अर्थात अपने सम्बन्धियों को खाना खिला दे। बस यह है इस्लामी विवाह। लेकिन हमने अपने आप उसकी सूरत बिगाड़ ली, आप ध्यान दें इस्लामी विवाह में क्या क्या अनिवार्य है–

1. आकिल बालिग़ लड़के लड़की (जिनमें निकाह वैध हो) की रज़ामन्दी।
2. लड़की बालिग़ हो या ना बालिग़ उसके वली की रज़ामन्दी। लेकिन हनफ़ी मस्लक में बालिग़ लड़की के वली की रज़ामन्दी अच्छी बात है परन्तु ज़रूरी नहीं।
3. कम से कम दो आकिल बालिग़ मर्द मुसलमानों या एक आकिल बालिग़ मुस्लिम मर्द और दो आकिल बालिग़ मुस्लिम औरतों के सामने ईजाब व क़बूल। (गवाहों के बिना ईजाब व कबूल सही नहीं है)।
4. महर भी अनिवार्य है बे महर निकाह न होगा। (जो 31 ग्राम से कम न हो)

खुत्बा पढ़ा जाना सुन्नत है न पढ़ा जाए तो निकाह प्रभावित न होगा, वलीमा महत्वपूर्ण सुन्नत है परन्तु यह भी निकाह को प्रभावित न करेगा।

अब ज़रा ज़ायद बातों और लग़वीयात पर ध्यान दे लें।

1. मंगनी में लड़की वाले के घर लोगों (मर्द हों या औरतें या दोनों) का इकटठा होना और उनके लिए खाने का इन्तिजाम करना, लड़की वाले का लड़के वालों को रकम पेश करना इन सब बातों का इस्लामी विवाह से दूर का भी सम्बन्ध नही, मुसलमानों को चाहिए कि इन्हें तर्क करें। आसान को मुश्किल न बनाऐं, अपने ग़रीब भाईयों को शर्मिन्दा न करें। अगर दो चार सम्बन्धी इन्तिजामी सुहूलत (व्यवस्थित सरलता) के पेशे नज़र मिल बैठ कर उचित दिन, तिथि, समय, स्थान नियुक्त कर लें और कुछ चाय पानी करलें तो कोई हरज़ भी नहीं अपितु कभी यह ज़रूरी भी हो जाता है।

2 यह लड़के और लड़की के तेल, उबटन और अटहर नाई, नाइन से लगवाना व्यर्थ बात है, अवैध है इस्लामी विवाह से इसका दूर से भी तअ़ल्लुक नहीं। अगर लड़का या लड़की या उनके घर वाले दूल्हा, दुलहन के मुक़ाबले की तैयारी के लिए इसकी आवश्यकता समझते हैं तो खुद से करलें, अपितु कुछ पौष्टिक पदार्थ खिलाना हो तो इस्लाम उससे नहीं रोकता परन्तु इन को निक़ाह का अंग बनाना और निकाह के साथ इस प्रथा को चलाना इस्लामिक विधान में हस्तक्षेप करना है।

3. निकाह से पहले नाकेह (दूल्हा) को नहलाने, और जामा जोड़ा, सेहरा, ताज आदि पहनाना इन सब का इस्लामी निकाह से कोई सम्बन्ध नहीं, अपितु बालिग़ लड़के को किसी मजबूरी के बिना कोई दूसरा नहलाए इस्लाम में यह खुद ही बुरा है, बालिग़ लड़के को औरतों, मर्दों के घेरे में नहलाना तो हराम (अवैध) ही है। कोई नहा कर कपड़े बदलना चाहता है तो इसे कौन रोकता है, आड़ में खुद ही नहा ले कपड़े बदल ले लेकिन फुजूल रस्मीयात का विरोध आवश्यक है ताकि इस्लामी विवाह का शुद्ध रूप सुरक्षित रहे।

4. भरे मजमेअ़ में माली सेहरा पेश करके इनआ़म माँगे, दरजी कपड़े बदलवा कर नेग मांगे आखिर इस नुक्कड़ नाटक का इस्लामी निकाह से क्या तअ़ल्लुक़? किस सहाबी के निकाह में

सेहरा मुहय्या किया गया था? क्या हज़रत अ़ली रज़ि0 को निकाह़ से पहले मजमेअ़ में जोड़ा पहनाया गया था? दरज़ी ने कपड़ा सिला उकसी सिलाई उसकी दूकान उसके घर दीजिए मजमेअ़ में अदा करने की क्या ज़रूरत इसको निकाह़ का अंग बनाना सरल दीन को कठिन बनाना है।

5. विवाहों में सबसे घृणित प्रथा भारी जहेज़ की मांग तथा उसका दिखावा है, जिसने कितनी शिक्षित तथा शिष्ट युवतियों को बिना व्याही बिठा रखा है और कितनों को अग्नि अर्पित कर दिया है इस जहेज़ का इस्लाम से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है, क़ानून होते हुए भी यह प्रथा समाप्त नहीं हो रही है कम से कम इस्लामी समाज से इस विकार को दूर करने के लिए दीनदार मुस्लिम युवकों को मैदान में आना होगा और नैतिक विधि से न मानने पर क़ानून से सहायता ले कर इस कुप्रथा को मिटाना होगा।

जारी.....

आपके प्रश्नों के .....

सराहत कर दी थी कि मैंने यह सारी रक़में तुमको दे दी, अब तुम इसमें जितना चाहो खर्च करो और बच जाए तो वह तुम्हारी है तो ऐसी सूरत में बची हुई रक़म रख लेने की गुंजाइश है।

(अल बहरुर्राइक़–3/114)

प्रश्नः ग़ैर मुस्लिमों से मुसलमानों का कभी कारोबारी और कभी कभी सियासी मुआमला रहता है, इस क़िस्म की मसलेहतों के पेशे नज़र अगर उनको शादी विवाह और मुख़्तलिफ़ किस्म के प्रोग्रामों में दावत दी जाए तो शरअन इस की इजाज़त है या नहीं?

उत्तरः इस्लामी तालीमात की रू से ग़ैर मुस्लिमों को दावत देना और उनको अपने प्रोग्रामों में शामिल करना जाइज़ ही नहीं बल्कि बेहतर है, अगर नीयत यह हो कि इस तरह वह इस्लाम से मानूस होंगे, अगर वह इस्लाम क़बूल न करें तो कम से कम इस्लाम और मुसलमानों के बारे में उनका रवय्या नर्म होगा तो उनको दावत देना बाइसे अज्र व सवाब भी होगा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब इस बात का हुक्म दिया गया कि आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को इस्लाम की तरफ़ बुलायें तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू हाशिम को जमा फ़रमाया और उनके लिए खाने का एहतिमाम भी फ़रमाया, (अद्दुर्रल मन्सूर 5/181) इससे मालूम हुआ कि अच्छी नीयत से अगर ग़ैर मुस्लिमों को दावत दी जाये तो यह बाइसे सवाब और इत्तिबाअ़े सुन्नते नबवी है।

प्रश्नः जिन लोगों का कारोबार सूदी है अगर वह दावत करें तो उनकी दावत में शिर्कत करना चाहिए या नहीं?

उत्तरः क़ुर्आन मजीद में सूद की हुरमत वाज़ेह तौर पर बयान की गई है, और हदीस में इसकी बड़ी बुराई आई है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूद लेने वाले, देने वाले लिखने वाले, और सूदी मुआमला में गवाह बनने वाले सभी पर लानत भेजी है। (मुस्लिम ह0न0 4092) इसलिए सूद खोरों की दावत न कबूल करना चाहिए।

❖❖❖

उर्दू सीखिए

—इदारा

उर्दू ह़र्फ़ों का तआ़रुफ़ (परिचय)

उर्दू अक्षर	प्रचलित नाम	ध्वनि
م	मीम	म
ن	नू	न
و	वाव	व
ہ	हे	ह
ھ	दो चशमी हे	ह
بھ	भ	भ
پھ	फ	फ
تھ	थ	थ
ٹھ	ठ	ठ
جھ	झ	झ
چھ	छ	छ
دھ	ध	ध
ڈھ	ढ	ढ
ڑھ	ढ़	ढ़
کھ	ख	ख
گھ	घ	घ
آ	आ	आ

नोटः पुल्लिंग को उर्दू में मुजक्कर कहते हैं और स्त्री लिंग को मुअन्नस। एक वचन को उर्दू में वाहिद और बहु वचन को जमा (जमअ़) कहते हैं। शब्द को उर्दू में लफ़्ज़ और वाक्य को जुमला कहते हैं। उ़र्दू के जो अक्षर हिन्दी में नहीं हैं उनको हिन्दी अक्षरों के नीचे बिन्दी रख कर लिखा गया है, उनके उच्चारण (तलफ़्फ़ुज़) जानने के लिए उर्दू जानकारों से सीखना पड़ेगा। हिन्दी के ग्यारह अक्षर उर्दू में नहीं हैं, उनको दो चशमी हे मिला कर लिखा जाता है जैसे भ, फ, थ आदि। उर्दू अक्षरों को गतिशील (मुतहर्रिक) बनाने के लिए तीन चिन्ह, ज़बर यह अक्षर के ऊपर लगता है, ज़ेर यह अक्षर के नीचे लगती है, पेश यह अक्षर के ऊपर लगता है इनका बयान विस्तार से अगले अंक में आयेगा।

जारी.....

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

लोकसभा चुनाव पर सरकार का खर्च 3426 करोड़—

मौजूदा लोकसभा चुनाव अब तक का सबसे मंहगा चुनाव साबित हुआ है जिसमें राष्ट्रीय ख़ज़ाने से केन्द्र सरकार ने 3426 करोड़ रूपये खर्च किए। साल 2009 के लोकसभा चुनाव में सरकारी खजाने से जितनी धनराशि खर्च की गई उससे 131% जियादा रूपये मौजूदा लोकसभा चुनाव में खर्च किए गए।

पाँच साल पहले हुए लोकसभा चुनाव में सरकारी खजाने से 1483 करोड़ रूपये खर्च किए गए थे। यह आधिकारिक खर्च 30,000 करोड़ रूपये के उस आंकड़े का हिस्सा है जिसके सरकार, राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों द्वारा नौ चरणों के चुनाव में खर्च किए जाने की संभावना जाहिर की गई थी। चुनाव आयोग का कहना है कि मतदाता जागरूकता एवं मतदान प्रतिशत बढ़ाने की दिशा में उसके प्रयासों पर हुए खर्च की वजह से अधिकारिक खर्च में बढ़ोत्तरी हुई। कई राजनीतिक दल चुनाव मैदान में उतरे हैं और निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ने वालों की संख्या में भी इजाफा हुआ है।

रुश्दी ने मोदी को कट्टरपंथी बताया—

भारतीय मूल के लेखक सलमान रुश्दी ने कहा कि भारत में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जो सरकार बनेगी वह एक परेशान करने वाली सरकार होगी और अगर भाजपा सत्ता में आती है तो देश में अभिव्यक्ति की आजादी का हाल पहले से बदतर हो सकता है। रुश्दी ने मोदी को विभाजनकारी शख्सियत और कट्टरपंथियों का कट्टरपंथी बताया।

दसवें वार्षिक पेन वर्ल्ड वॉएस फेस्टिवल में रुश्दी ने कहा, अभी तक भाजपा के सत्ता हासिल करने के बावजूद पत्रकारों और लेखकों को परेशान किया जाता है। लोग चिंतित हैं और इसलिए कोशिश करते हैं कुछ ऐसा न करें जिससे उन्हें मोदी समर्थकों के प्रकोप का सामना करना पड़े।

रुश्दी ने कहा कि भारत में मोदी की तरह का कभी कोई राजनेता नहीं हुआ। उन्होंने माना कि भाजपा के लोकसभा चुनाव और मोदी के अगला प्रधानमंत्री बनने की अधिक संभावना है और हमें यह देखना होगा कि प्रधानमंत्री पद उन्हें कितना उदार बनाता है।

प्रचार की टाईमिंग में पिछड़ गई काँग्रेस— राजनीति में सबसे ज्यादा अहमियत 'टाइमिंग' की होती है। मगर लोकसभा चुनाव प्रचार में कांग्रेस की 'टाइमिंग' खराब रही। चुनाव गुजर जाने के बावजूद पार्टी का नारा लोगों की जुबान पर नहीं चढ़ पाया है। बड़े नेताओं की रैली में कार्यकर्ताओं में जोश भरने वाला संगीत भी सिर्फ वेबसाइट तक सीमित है। जबकि 2009 चुनाव में मशहूर फिल्म स्लमडोग मिलेनियर के 'जय हो' की थीम पर बनाया गया कांग्रेस का चुनावी गीत काफी लोकप्रिय हुआ था। कांग्रेस रणनीतिकार मानते हैं कि तमाम कोशिशों के बावजूद चुनाव प्रचार रफ़्तार नहीं पकड़ सका। इसकी वजह शुरुआती गलतियां भी रही हैं। 'मैं नहीं हम' के नारे पर नकल करने का आरोप लगा। ❑❑